जीवनी
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम
जीवनकी
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

लेखक
हज़रत मिरज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद
रजी अल्लाह अन्हों खलीफ तुलमसीह सानी (द्वितीय)

अनुवादक
बुश्रा तम्ब्रा गौरी
सदर लजना इमाउल्ला भारत

प्रकाशक :
नज़ारत नशरो इशाअत
सदर अन्जुमन अहमदिया
कादियान - 143516
जिला - गुरदासपुर (पंजाब)
अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम तथा आप की पारिवारिक दशा

अहमद जो अहमदिया जमात के संस्थापक थे आप का पूरा नाम गुलाम अहमद था तथा आप कादियाने के नवाबी थे जो बटाला रेलवे स्टेशन से नज़र मील अमृतसर से चौबीस मील तथा लाहौर से लगभग सत्तर मील पूर्व में एक कसबा है आप लगभग 1836 ई. या 1837 में इसी गांव में मिर्जा गुलाम मुरतजा साहिब के घर शुक्रवार के दिन पैदा हुए। आप का जन्म जुड़वाथा था अर्थात आप के साथ एक लड़की का भी जन्म हुआ था जिस का भोजन ही समय पश्चात् देहांत हो गया था।

इस से पूर्व कि में आप की जीवनी का वर्णन करने आवश्यक है कि संक्षिप्त रूप में आप के परिवार के भी कुछ हालात का वर्णन कर दिया जाए आप का परिवार अपने क्षेत्र का एक सम्मानित परिवार था तथा इस का पारिवारिक इतिहास बरलांस से जो अमीर तैमूर का चाचा था मिलता है तथा जब अमीर तैमूर ने कुश ने क्रोण के क्षेत्र पर भी जिस पर इस का चाचा अधिकारी था अधिकार कर लिया तो बरलांस परिवार खुरासान में चला आया तथा लम्बे समय तक यहीं रहा परन्तु इसकी शताब्दी हिजरी या सौलहंडी शताब्दी मसीही के अन्त में इस परिवार का एक सदस्य मिर्जा हादी बाद झूत गैर मालूम समस्याओं के कारण इस देश की छोटे कर लगभग दो सी आदमी के साथ हिन्दुस्तान आ गया तथा दिशा व्यास के समीप के क्षेत्र में उस ने अपना देश लगाया तथा व्यास से 9 मील की दूरी पर उस ने एक गांव बसाया तथा उस का नाम इस्लामपुर रखा (अर्थात् इस्लाम का शहर) क्योंकि आप बहुत अधिक योग्य पुरुष थे इसलिए दिल्ली की सरकार की ओर से इस क्षेत्र के काजे नियुक्त किए गए तथा इस पद के कारण ही इस गांव का नाम इस्लामपुर के बजाए इस्लामपुर काजी हो गया। इस्लामपुर जो काजी का स्थान है तथा बिगड़ते बिगड़ते। इस्लामपुर का नाम तो पूर्ण रूप से भोजन गया तथा केवल काजी रह गया जो फंजाबी लहजे में कादिर बन गया

..........................................................
तथा अन्त में इस से बिगड़ कर इस का नाम कादियान हो गया अतः मिर्जा हादी बेग साहब ने खुदासान से आ कर ब्यास के निकट एक गांव बसाया तथा उस में रहना आरम्भ कर दिया तथा इसी स्थान पर उन का परिवार हमेशा रहा तथा बावजूद दिल्ली की सरकार से दूर रहने के इस परिवार के सदस्य मुगलीया सरकार के अधीन सम्मानित पदों पर कार्य करते रहे तथा जब मुगलीया परिवार को दुर्बलता पहुँची तथा पंजाब में खाना जंगी फैल गई तो यह परिवार एक स्वतंत्र शासन के रूप में कादियान के इर्द-गिर्द के क्षेत्रे पर जो लगभग सात मिल का क्षेत्र था राज्य करता रहा परंतु सिक्कियों के जोर के समय राम गड़ीया सिक्कियों ने कुछ और परिचारों के साथ मिल कर इस परिवार के विरुद्ध युद्ध आरम्भ कर दिया उन के परदादा ने तो अपने समय में एक सीमा तक रहते अक्रमणों को रोका परंतु धीर-धीर हजरत मिर्जा साहब के दादा के समय इस रियासत की दशा ऐसी कमजोर हो गई कि केवल कादियान जो इस समय एक फिले के रूप में था इस के चारों ओर प्रचीर (दीवार) थी इस के अधिकार में रह गया तथा शीघ्र सारा क्षेत्र उन के हाथों से निकल गया और अन्ततः कुछ गांव के निवासियों के साथ मिल कर सिक्कियों ने इस पर भी अधिकार कर लिया तथा इस परिवार के सभी पुरुष तथा स्त्रियाँ कैद कर ली गई परंतु कुछ समय के पश्चात् सिक्कियों ने उन को उस क्षेत्र से जाने की आज़ादी दी वे रियासत कपूरथाता में चले गए तथा वहां लगभग सोलह साल रहे तथा इस के पश्चात् महाराजा रणजीत सिंह का काल आरम्भ हुआ तथा उन्होंने सभी छोटे-छोटे राज्यों को अपने अधिकार कर लिया तथा इस प्रबंध में हजरत मिर्जा साहब के पिता को भी उन की जागीर का बहुत भाग तिहार वापिस कर दिया तथा वे अपने भाईयों के साथ महाराजा की सेना में भर्ती हो गए तथा जब अंग्रेजी सरकार ने सिक्कियों की सरकार को नष्ट कर दिया तो उनकी जागीर छीन ली गई परंतु कादियान की धरती पर उन को मालिकाना अधिकार दे दिया गया।

इतिहास में आप का परिवारिक वर्णन

यह संक्षिप्त हालात लिखने के पश्चात् सर लेयपल गरीफन की पुस्तक "पंजाब चीफस" का वे भाग जो हजरत मिर्जा साहब के परिवार के बारे में है हम लिख देना उचित समझते हैं।
शहीदावर के राज्य काल के अन्तिम वर्ष अर्थात 1530 में एक मुगल हादी बेग निवासी समरकंद अपना देश छोड़ कर पंजाब में आया तथा जिला गुजरातपुर में रहना आरम्भ कर दिया यह कुछ पद्ध सिखा आदमी* था तथा कादियान के ईर्गर्द के सत्तर (70) गांवों का काजी था या मजिस्ट्रेट नियुक्त किया गया कहते हैं कि कादियान उसे आवाद किया तथा इस का नाम इस्लामपुर काजी रहा जो बदलते बदलते कादियान हो गया कई पीढियों तक यह परिवार शाही राज्य काल में सम्मानित पदों पर लगा रहा तथा केवल सिखों के राज्य में यह निर्धारित की दशा में रहा मीरा गुलाम मुहम्मद ने उस का पुनः अला मुहम्मद राम गड्ढिया तथा कहीं मिलतों से जिन के अधीकार में कादियान के ईर्गर्द का क्षेत्र था लड़ते रहते थे अन्त में अपनी सारी जागीर को खो कर अता मुहम्मद बेगोवाल में सदार फतेह सिंह अहलूवालीया की सुरक्षा में चला गया तथा बाहर वर्ष तक शान्तिमय जीवन व्यतीत किया उस की मृत्यु पर रंजीत सिंह ने जो रामगढ़ीया मिलत के सारे क्षेत्र का अधिकारी हो गया था गुलाम मुर्तजा को कादियान चापिस बुला लिया उस को पैट्रूक जागीर का एक बड़ा भाग उसे वापस दे दिया इस पर गुलाम मुर्तजा अपने भाईयों के साथ महाराजा की सेना में भर्ती हो गये तथा कर्मियों की सीमा तथा कई दूसरे स्थानों पर बहुत अच्छे सम्मान योग्य कार्य किये नौना निवास सिंह, जो मिलत का वर्ण नियुक्त रहे 1841 में यह जरूरल व बनचुरा के साथ मन्दी तथा कुल्लू मेजा गया तथा जब 1843 में एक पैदल जीता का निर्माण बना कर पियार बेजा गया। पेशाकर जहाज के फसाद में उस ने कार्यों में किये तथा जब 1848 में बिज्ञाप हुआ तो यह अपनी सरकार का राजकुमार लाल रहा तथा इस की ओर से लड़ा इस अवसर पर उस के भाई गुलाम महदीयुदीन ने भी अच्छी सेवायें की जब भाई महाराज सिंह अपनी सेना के लिए दियान मूर्तजा की सहायता के लिए मुलातान की ओर जा रहा था तो गुलाम महदीयुदीन और दूसरे जागीरदारों बंगार खान, साहिब खान खान ठाकरा ने मुसलमानों को बड़काया तथा इस दान द्वारा सेना के साथ बागीयों का मुकाबला किया तथा उन को पराजित किया तथा उन को दरीयाएँ चनाव के अतिरिक्त किसी और भागे का कोई मार्ग ना था जहां गए।

* वास्तविकता में बहुत ज्ञात और मोम्ब मर्दे शुद्ध था।
अल्हाक* के अवसर पर इस परिवार की जागीर छूट ली गई परन्तु 700 रुपए की पेनशन गुलाम मुरातजा तथा इस के भाईयों को दी गई तथा कादियान तथा इस के आस पास के देहातों पर उन का अधिकार रहा इस परिवार ने 1857 के विद्रोह के समय अच्छी सेवायें की गुलाम मुरातजा ने बहुत से आदमी भर्ती किए तथा उस का पत्र गुलाम कादिर जराज निकलसर साहब बहादूर की सेना में उस समय था जबकि (उन्होंने) वे तथ्यमूढ़ गांट पर 46 नेपुट अनफान्डी के विद्रोहीयों को जो स्वालकोट से भागे थे उनको मीठे के घाट उतार दिया। जराज निकलसर साहब बहादूर ने गुलाम कादिर को एक प्रमाण पत्र दिया जिस में यह लिखा है कि 1857 में कादियान का परिवार जिला गुरदासपुर के दूसरे सभी परिवारों से अधिक नमक हलाल रहा गुलाम मुरातजा जो एक योगी हकीम था 1876 में उनकी मृत्यु हुई और 1876 में उसका पुत्र का पत्र गुलाम कादिर उन का उत्तराधिकारी नियुक्त हुआ गुलाम कादिर की सहायता करते के लिए सदा तैयार रहता था उस के पास उन अफसरों के जिन का शासन कर्मकार्यों से सम्बन्ध था बहुत से प्रमाण पत्र थे वह कुछ समय तक गुरदासपुर में दफ्तर जिला का सुप्रीमेंट रहा उस का इकलौता पुत्र छोटी आयु में मर गया तथा उस ने अपने भतीजे सुलतान अहमद को गोद ले लिया जो गुलाम कादिर की मृत्यु अर्थात 1883 के पश्चात् परिवार का मुखिया माना गया भिजी सुलतान अहमद ने उप-तहसीलदारी से सरकार की नौकरी अर्जित की तथा अब ऐसस्तारा इंस्टीट्युट है वह कादियान का नम्बरदार भी है निजामुद्दीन का भाई ईमामुद्दीन जो 1904 में मर गया दिल्ली के देह के समय हादसन होर (रसालै) में रसालदार था इस का पिता गुलाम महदीुद्दीन तहसीलदार था।

यह वर्णन करना आवश्यक है कि गुलाम अहमद जो गुलाम मुरातजा का छोटा पुत्र था। मुसलमानों के सुप्रीम धार्मिक अहिमादिव्या सम्प्रदाय का संस्थापक हुआ यह धार्मिक व्यक्ति 1837 में पैदा हुआ इस को शिक्षा बहुत अच्छी मिली 1891 में उस ने इसलिये सिद्धांतों के अनुसार महदी या मसीह मौजूद होने का दावा किया क्योंकि यह एक शिक्षित तथा मन्त्रक क था इस लिए देखते ही देखते बहुत सारे लोग इस के मानने वाले हो गए तथा अब अहमदिया जमाआत की संख्या पंजाब तथा हिन्दुस्तान के दूसरे स्थानों में तीन लाख के लगभग बढ़ती जाती है मिजाज़ अरबी

* अंग्रेजों के साथ पंजाब के मिल जाने पर।
हजरत अकबर अलैहिस्सलाम का जन्म, बच्चन का समय तथा पिता जी का वर्णन

हजरत मिर्जा साहब के परिवार के संक्षिप्त हालात लिखने के पर्चात हम आप के हालात का वर्णन करने की ओर ध्यान देते हैं जैसा कि आरम्भ में वर्णन किया गया है कि आप का जन्म 1836 या 1837 में हुआ था जो कि आप के पिता जी की उन्नति का समय था क्योंकि उन को उस समय जा गई के कुछ गांव तथा महाराजा रणजीत सिंह की सैनिक सेवा के कारण बहुत मान प्राप्त था परंतु अलाउद दीक्षा यह थी कि आप का पतन पोषण ऐसे वातावरण में हो जहां आप का ध्यान खुदा ताजला की ओर हो इसी कारण आप के जन्म के तीन वर्ष पर्चात ही महाराजा रणजीत सिंह की मृत्यु के साथ ही सिक्का राज्य का पतन हो गया इस पतन के साथ आप के पिता जी भी विभिन्न चिंताओं में पढ़ गए तथा पंजाब के अंग्रेजों के मिल जाने के अवसर पर उन की सम्पत्ति छीन ली गई तथा हजारों रुपये व्यय करने के पश्चात भी वे अपनी सम्पत्ति वापित ना कर सके जिस का दुख उनके दिल पर सदा रहा हजरत मिर्जा साहब आपनी एक पुस्तक में लिखते हैं कि:-

"मेरे पिता जी अपनी असफलताओं के कारण अधिकतर दुखी तथा पोषान"
रहते थे उन्होंने मुकदमों की पैरी में लगभग सतर हजार रुपये व्यय किये जिस का परिणाम अन्त में असफलता ही था क्योंकि हमारे पूर्वजों के गांव समय से हमारे अधिकार से निकल चुके थे उन का वापस आना एक झूठा स्वाभाविक था इस असफलता के कारण मेरे पिता जी बहुत अधिक गम दुख तथा बैचनी में जीवन व्यतीत करते थे तथा मुझे उन हालात को देख कर पवित्र तबदीली ग्रहण करने का अवसर प्राप्त होता था क्योंकि हजारत बालिद साहिब का कठिन जीवन मुझे इस निष्काम सेवा के जीवन का पाठ देता था जो संसारीक मैल-कुचैल से पवित्र है। यथापि मिर्जा सहब का बुझ गांव पर अधिकार बाकी था तथा अंग्रेज सरकार की ओर से कुछ वार्षिक ईनाम भी लगा था नौकरों के दिनों की पैसाहान भी थी परन्तु जो कुछ वे देख चुके थे उस हिसाब से वह सब कुछ बहुत ही कम था इसी कारण वे सदा दुखी तथा पेशाबें रहते थे कि जिस कदर में ने इस अपवित्र संसार के लिए प्रयत्न किये हैं अगर वे प्रयत्न में ने धर्म के लिए किये होते तो आज में शायद कतने वक्त था गोसे वक्त होता तथा प्रायः यह शेर पढ़ते थे:

“ॐर गुजजशत नमान्दासत जज अयामे चन्द्र
बे के दर चार किसे सुबह कन्म शामे चन्द्र”

और में ने कई बार देखा कि अपना बनाया हुआ शेर वे रो कर पढ़ते और वे यह है:

अज्जीरे तो ‘ऐ’ किसे हरवे किसे
ने चसत उमीदम के बचदम ना उमीद
तथा कभी वे दरदे दिल से अपना यह शेर पढ़ करते थे:

बआद दीयहद अश्राख व खाक पारे किसे
मरादे असत के दरखी तपद बजाए किसे

हजार ईजजज़ जल्लाहिस्मा (परमात्मा) के सामने खाली हाथ जाने की हसत
दिन बदिन अपनी आयू के अन्तिम वर्षों में उन पर हारी होती गई थी अधिकतर
पश्चातप से कहा करते थे कि संसार की बेहद चिंताओं के लिए में ने अपनी उमर
ना हक जाए कर दी।

बचपन में ही अल्लाह की ईमादत का शौक
इस लेख से जो ज्ञात मिर्जा साहब ने अपने पिता की इस अवस्था के विषय में लिखा है जिस में आप के पिता जी के बचपन से जबानी तक के युग का पता लगाता है कि खुदा ताअला ने ऐसे रंग में आप की तरीकत (शिक्षा) की जिस के कारण संसार का प्रेम आप के मन में पैदा ही ना होने पाये, इस में कोई शक नहीं कि आप के पिता तथा बड़े भाई की संसारिक दशा उस समय भी ऐसी थी कि वे संसारिक तौर पर आदरणीय तथा ध्यानवान कहलाते थे तथा अंधकार के लिए उन की आज्ञा मानते तथा उन का सम्मान करते थे परंतु फिर भी उन का संसार के पीछे पड़ना था अपनी सारी आयु इस की प्राप्ति में व्यय कर देना परंतु फिर भी उन का इस सीमा तक प्राप्त न कर सकता जिस सीमा तक वे इस पर पवित्रित आधिकार निषाद थे इस पवित्र मन को जो अपने अन्दर किसी प्रकार भी मैल न रखता था यह कर देने के कारण था जिससे उन का जितना भी इसका संसार कुछ दिन का है तथा आकाश में खुदा से माफ़ होगा उन ने अपने बचपन फिर भी आयु से इस पाठ को ऐसे याद किया कि मृत्यु तक ना भुला पाया तथा दुनिया कई प्रकार के गुलद वस्त्र पहन कर उन के समझु आई उस को उस के पथ से हटा देने का प्रयत्न किया लेकिन इस ने कभी इस की ओर आकर्षित ना हुआ सास से ऐसी जुबाई कर ली कि फिर इस से कभी ना मिला।

मिर्जा साहब को अपने बचपन से तक अपने पिता जी के जीवन में एक ऐसा तकनी नमूना देखने का अवसर मिला कि दुनिया से आप की तत्कालीन सरद (दुनिया से अलग होना) हो गई तथा जब आप की आयु बहुत ही छोटी थी तब भी आप की सारी इच्छाएँ अलाल रही थी जिस का प्रज्ञा में ही लगी रहती थी आप के जीवन की लेखक शेख याकूब अली सहीद एक किस्सा जो आप की बहुत छोटी आयु में हुआ वर्णन करते हैं कि आप की आयु उस समय बहुत छोटी थी इस समय आप ने अपनी ही आयु की एक लड़की जिस से बाद में आप का विवाह हुआ कहा करते थे:

"नामुरदे दुआ कर कि खुदा मेरे (मुझे) नमाज नसीब करो”

इन शब्दों से बहुत बचपन की आयु के हैं पता चलता है कि अरुंधति बचपन की आयु से आप के दिल में कैसी भावनाएँ थीं तथा आप की इच्छाओं का केन्द्र फिर प्रकार खुदा ही खुदा हो रहा था और ही इस प्रतिभा का पता चलता है जो बचपन की आयु से आप के अन्दर पैदा हो गई थी क्योंकि इन शब्दों से पता चलता है कि इस समय भी आप अपनी सारी इच्छाओं को पूरा करने वाला खुदा ताअला को ही.
शिक्षा प्राप्ति का समय

जिस समय में आप का जन्म हुआ था वह समय बहुत अज्ञाता का था। लोग शिक्षा की ओर बहुत कम ध्यान देते थे। सिक्कों के समय की बात तो यहां तक प्रसिद्ध है कि अगर किसी के नाम किसी मित्र का कोई पत्र आ जाता तो उस को पढ़वाने के लिए उस को बहुत प्रयत्न तथा मेहनत करनी पड़ती तथा कई बार तभी समय तक पत्र पढ़ा रहता था। बहुत से धनवान निकुंज अशिक्षित थे तब क्योंकि अल्लाह ताआला ने आप से बहुत बड़ा कार्य करवाना था इस लिए आप की शिक्षा का उस ने आप के पिता जी के मन में शौक डाल दिया तथा इन संसारकर्मियों जिन में वे थे इस अज्ञाता के समय में भी उन्होंने अपनी सन्तान को समय की आवश्यकता अनुसार शिक्षा देने में लापरवाही ना की अत: आप जब छोटे ही थे आप के पिता ने एक अध्यापक आप की शिक्षा के लिए रखा जिस का नाम फजल इलाही था उन से हजरत मिर्जा साहब ने कुरान मजीद तथा फारसी की कुछ पुस्तकें पढ़ी इस के पश्चात् दस वर्ष की आयु में फजल अहमद नाम के अध्यापक रहे गए। यह अध्यापक बहुत नेत्र तथा धार्मिक आदर्श हो तथा जैसा कि हजरत मिर्जा साहिब स्वयं लिखते हैं कि वे आप को मुहिम भ्रम तथा परिव्रत में शिक्षा देते थे इस अध्यापक से हजरत साहब ने अरबी व्याकरण की कुछ पुस्तकें पढ़ी। इस के पश्चात् सत्रह अठार वर्ष की आयु में मौलवी गुल अली शाह आप के अध्यापक रहे गए इस से अरबी व्याकरण, मन्त्रित तथा हिम्मत की कुछ पुस्तकें पढ़ी तथा चिकित्सा विज्ञान की कुछ पुस्तकें आपने अपने पिता जी से पढ़ी जो एक योग्य हकीम थे। यह शिक्षा उस समय के अनुसार जिस में आप शिक्षा प्राप्त कर रहे थे एक बहुत बड़ी शिक्षा थी फर्नु वास्तव में उस कार्य के मुकाबले में जो आप ने करना था कुछ भी
ना था अर्थात्: हम ने कुछ वे व्यक्ति भी देखे हैं जो आप के साथ उन अध्यापकों से पढ़ते थे जिन को आप के पिता जी ने आप की शिक्षा के लिए रखा था वे बहुत कम 
बुद्धि तथा ज्ञान रखने वाले थे तथा उन को एक साधारण पढ़े विश्लेषन व्यक्ति से अधिक 
स्थान नहीं दिया जा सकता तथा जो अध्यापक आपकी शिक्षा के लिए रखे गए थे वे 
भी कोई बड़े ज्ञानी तथा अधिक शिक्षित नहीं थे क्योंकि उस समय शिक्षा विकस 
कर तथा फारसी तथा अरबी की कुछ पुस्तकें पढ़ लेने वाले बहुत शिक्षित माना 
जाता था तथा जिन हालात के अधीन और जिन अध्यापकों के द्वारा आप की शिक्षा 
दी गई वे ऐसे थे कि उन के द्वारा आप को कोई ऐसी शिक्षा नहीं मिल सकती थी जो 
उस कार्य के लिए आप को त्यार कर देती जिस के करने के लिए अल्लाह ने आपको 
भेजा था। हां इतना उस शिक्षा का परिणाम आवश्यक हुआ कि आप को फारसी, अरबी 
आ गई तथा फारसी अच्छी तरह, अरबी कुछ कुछ आप बोलने भी लगे इस से 
अधिक आप ने कोई भी शिक्षा प्राप्त ना की तथा धार्मिक शिक्षा तो फिसी अध्यापक 
से भी प्राप्त ना की। हां आप को अध्ययन करने का बहुत चाह था तथा आप अपने 
पिता जी के पुस्तकालय में इतना व्यस्त रहते थे कि कई बार तो आप के पिता जी 
को एक तो इस कारण कि आप के स्वास्थ्य को हानि ना पहुंचे तथा एक इस कारण 
कि आप इस ओर से हट कर उन के कार्य में उन की सहायता करें आप को पढ़ने 
से रोकना पड़ा था।

नौकरी का समय तथा ईसाइयों से वाद-विवाद

जब आप शिक्षा प्राप्त कर चुके तो उस समय ब्रिटिश सरकार का पंजाब पर 
अधिकार हो चुका था विद्रोह का समय भी बीत चुका था तथा हिंदुस्तानी इस 
बात को अच्छी तरह समझ चुके थे कि अब इस सरकार की नौकरी में ही समान है इस 
कारण विभिन्न समय सम्पर्कों के युवक इस की नौकरी करने लगे थे ऐसे समय में 
तथा इस बात को जान कर कि हजरत मिरजा साहिब का मन जमींदार के कार्यों में 
नहीं लगता अपने पिता जी के सुझाव से आप स्वालकोट नौकरी प्राप्त करने को गए 
तथा वहां हिंदी कमिटर साहिब ने दक्षता में नौकरी प्राप्त कर ली परलो अधिकतर 
समय धार्मिक अध्ययन में ही व्यस्त रहते तथा नौकरी के बाद के समय में या तो 
आप स्वंय अध्ययन करते या दूसरे लोगों को शिक्षा देते या धार्मिक बात चीत में भाग
लेते थे तथा इस समय भी आप की परहेजगारी तथा खुदा चोफी का इतना प्रभाव था कि बावजूद इस के कि आप युक्त थे तथा आप की आयु केवल अठाईस वर्ष थी मगर बुद्धि व्यक्ति मुसलमानों में से भी तथा हिंदुओं में भी आप का समान करते थे परन्तु उस समय भी आप एकान्त स्थान में थे तथा आपने घर से बाहर कम जाते तथा अभिक्रिया समय बहरी व्यक्तित्व करते ईसाई मिशन उन दिनों में पंजाब में नया नया आया तथा मुसलमान उन के आक्रमण में अंजन थे तथा अक्सर ईसाईयों से हार जाते थे परन्तु हज़रत मिर्ज़ा साहिब की जिस समय भी ईसाईयों से बात चीत हुई उन को नीचा देखना पड़ा अत: पादरियों में से जो लोग सच्चे थे वे धर्मीक भिन्नता रखते हुए भी आप का समान करते। अत: आप का जीवनी लेखक लिखता है कि रेवांड, बातचीत एम.ए जो स्मालकोट के मिशन में कार्य करते थे तथा जिन से हज़रत मिर्ज़ा साहिब के बुद्धि से बाद विवाद होते रहते थे जब विलायत वापस जाने लगे तो स्वयं सोचते हुए आप ने मिलने के लिए आये तथा जब अंजन साहिब ने पूछा कि वे किसे लिए आए है तो रेवांड ने कहा कि अपने हज़रत मिर्ज़ा साहिब के बुद्धि से मिलने के लिए तथा जहाँ आप बैठे थे वहाँ सीधा चले गए तथा कुछ समय बैठ कर वापस चले गए। यह उस समय का बात है कि जब ब्रिटिश सरकार की नई-नई विजय को पादरी लोग अपनी विजय समझ रहे थे तथा वे इतने घमण्ड हो गए थे कि उन दिनों जो पुस्तकें ईस्ट्लाम के विरुद्ध लिखी गई उन को पढ़ने से पता चलता है कि पादरियों ने उस समय शायद यह सोच लिया कि कुछ ही दिनों में सारे मुसलमानों को एकद बना सरकार बलपूर्वक ईसाई बना देंगी तथा वे ईस्ट्लाम तथा ईस्ट्लाम के संस्थापक के लिए संलेन से संलेन शब्दों का प्रयोग करने में जरा भी संकोच ना करते तथा यहाँ तक कि कुछ अक्लमन्द युद्धीय लोगों को ही उन पुस्तकों को देख कर लिखना पड़ा कि उन लेख के कारण यदि दोबारा सन 57 की तरह दिशाओं हो जाए तो कोई आर्थिक नकसा ना होगी तथा यह स्थिति उस समय तक रही जब तक कि ईसाई पादरियों को विचार ना हो गया कि हिंदुस्तान में ब्रिटिश सरकार है ना कि पादरियों की ओर यह तो महारानी विक्टोरिया की सरकार बल पूर्वक ईसाई बनाने की नहीं है तथा वह यह कभी पसंद नहीं करती कि किसी धर्म को अनुचित ढंग से दिल उखाया जाए तथा उस समय के ईसाई तथा मुसलमानों के समन्वय बहुत खिंचे हुए थे तथा पादरियों का स्वभाव केवल उन्हीं लोगों के लिए
नौकरी छोड़ना तथा मुकदमें की पैरवी

लगभग चार वर्ष आप स्वालकोट में नौकरी करते रहे परन्तु बहुत अधिक मजबूती के साथ अंत में पिता जी के लिखने पर जल्दी ही त्याग तत्र दे दिया तथा वापस आ गए तथा पिता जी की आज्ञा के अनुसार उन के जमीनदारी के मुकदमों की पैरवी (देख भाल) में लग गए परन्तु आप का मन इस कार्य में हरी लाता था क्योंकि आप अपने माता पिता के बहुत आज्ञा कारी थे इसी कारण आप अपने पिता जी की आज्ञा को ठीक करने तो ना थे परन्तु उस काम में आप का मन बिल्कुल नहीं लगता था अतः उन दिनों आप को देखने वाले लोग कहते हैं कभी कभी आप मुकदमों में हार कर आते तो आप के चेहरे पर खुशी के चित्त होते थे तथा लोग समझते थे कि शायद विजय होंगे क्योंकि आप अपने पिता जी की आज्ञा को पूरा करने तो ना थे परन्तु उस काम में आप का मन बिल्कुल नहीं लगता था अतः उन दिनों आप को देखने वाले लोग कहते हैं कभी कभी आप मुकदमों में हार कर आते तथा आप के चेहरे पर खुशी के चित्त होते थे तथा लोग समझते थे कि शायद विजय होंगे क्योंकि आप अपने पिता जी की आज्ञा को पूरा करने तो ना थे परन्तु उस काम में आप का मन बिल्कुल नहीं लगता था अतः उन दिनों आप को देखने वाले लोग कहते हैं कभी कभी आप मुकदमों में हार कर आते तथा आप के चेहरे पर खुशी के चित्त होते थे तथा लोग समझते थे कि शायद विजय होंगे क्योंकि आप अपने पिता जी की आज्ञा को पूरा करने तो ना थे परन्तु उस काम में आप का मन बिल्कुल नहीं लगता था अतः उन दिनों आप को देखने वाले लोग कहते हैं कभी कभी आप मुकदमों में हार कर आते तथा आप के चेहरे पर खुशी के चित्त होते थे तथा लोग समझते थे कि शायद विजय होंगे क्योंकि आप अपने पिता जी की आज्ञा को पूरा करने तो ना थे परन्तु उस काम में आप का मन बिल्कुल नहीं लगता था अतः उन दिनों आप को देखने वाले लोग कहते हैं कभी कभी।
वे समझते थे कि संसारिक कार्यों से अलग होने का कारण सुसंदर है अतः आप फर्मया (कहा) करते थे कि कभी-कभी आप के पिता जी बहुत परेशान हो जाया करते थे। तथा कहते थे कि मेरे बाद इस लड़के का निर्वाह किस प्रकार होगा तथा इस बात का उन को बहुत दुख था कि यह आपने भाई पर निर्भर रहेगा तथा कभी-कभी वे आप के अधिक पढ़ने पर चिंट कर आप को मुल्तान भी कह देते थे तथा फर्माते थे कि यह हमारे घर में मुल्तान कहां से पैदा हो गया परन्तु वाल्जू इस के उन के मन में स्वंय आप का प्रभाव था तथा जब कभी वे अपनी संसारिक असफलता को याद करते तो धार्मिक बातों में आप को लीन देख कर प्रसन्न होते थे तथा उस समय फर्माते थे कि असल कार्य तो यह ही है। जिस में मेरा पुत्र लगा हुआ है परन्तु क्योंकि उन की सारी आयु संसारिक कार्यों में ही व्यतीत हुई थी इसी कारण परचाताप उन के मन में रहता परन्तु ज्ञात मिर्जा साहिब इस बात की परवाह ना करते थे तथा किसी किसी समय अपने पिता जी को भी कुरान तथा हदीस सुनाया करते थे तथा यह एक अदभुत दृष्ट था कि पिता तथा पुत्र दो अलग अलग कार्यों में लगे हुए थे तथा दोनों में से हर एक दुसरे को अधीन करना चाहता था पिता चाहता था कि किसी प्रकार पुत्र को अपने विचारों के अनुसार बना ले तथा संसारिक समाज की प्राप्ति में लगा दे तथा पुत्र चाहता था कि अपने पिता को संसारिक कार्यों से मुक्ति दिला कर अलङ्कार ताअाला से प्यार करने में लगा दे अतः यह अदभुत दिन थे जिन का खौफना कलम का कार्य नहीं प्रत्यक्ष मनुष्य अपनी-अपनी शक्ति के अनुसार अपने मन में इस का नक़शा खींच सकता है। इस समय आप के समुख फिर नौकरी का प्रश्न उत्पन्न हुआ तथा रियासत कपूरथला के शिक्षा विभाग का अफसर बनाने का निर्देश हुआ परन्तु आप ने मना कर दिया तथा अपने पिता जी को दुखी देख कर इस बात की ही पसंद किया कि घर पर ही रहें तथा उन के कार्यों में जहां तक हो सके हाथ बटाए। जैसा कि पहले बताया गया है कि आप का मन उस कार्य में भी नहीं लगता था परन्तु आप अपने पिता जी की आज्ञा अनुसार उन के अन्तिम दिनों को सुखी बनाने के लिए इस कार्य में अवश्य कुछ रहते थे अतः हार जीत से आप को लगाव न था।

एक मुकदमें में निशाने ईलाही
हजरत मसीह मौजद अल्लाहसलाम चाहे इस समय में अपने पिता जी की 
सहायता के लिए उन के संसारिक कार्यों में लगे हुए थे परन्तु आप का मन किसी और 
तरफ था। तथा "दसत दर कार दिल वा यार"* की उदाहरण बने हुये थे मुकद्दमों से 
थोड़ा समय मिलता तो अल्लाह तात्कालिक योद्धा में लॉन हो जाते तथा इन यातायातों में 
जो आप को उन मुकद्दमों के समय में करनी पड़ती आप एक समय भी नमाज को 
पढ़ने में देर ना होने देते। बल्कि अपने समय पर सारी नमाजें पढ़ते अतः मुकद्दमों के 
समय भी नमाज को ना छोड़ते अतः एक बार तो ऐसा हुआ कि आप एक आवश्यक 
मुकद्दमे के लिए जिस का प्रभाव बहुत सारे मुकद्दमों पर पड़ना था तथा जिस का आप 
के पक्ष में हो जाने से आप के बहुत सारे अधिकार सुरक्षित हो जाते थे अदालत गए 
उस समय कोई आवश्यक मुकद्दमा चल रहा ता उसमें देर हो गई तथा नमाज का 
समय आ गया जब आप ने देखा कि मेजिस्ट्रेट तो मुकद्दमों में व्यस्त है तथा नमाज 
का समय गुजरत जा रहा है तो आप ने इस मुकद्दमों को बुद्धा पर छोड़ दिया तथा 
वसंत एक ओर जा कर वजू (मुंह हाथ धोना) किया तथा बृक्षों की छाया तले नमाज 
पढ़नी आरम्भ कर दी जब नमाज आराम कर दी तो अदालत से आप के नाम की 
आवाज पड़ी आप आराम से नमाज पढ़ते रहे तथा इस ओर ध्यान न दिया तथा जब 
नमाज पढ़ चुके तो विश्वास था कि मुकद्दमों में विरोधी को एक तरफ की डिगरी मिल 
गई होगी क्योंकि अदालतों का यह नियम है कि जब एक पक्ष उपस्थित न हो तो 
विरोधी पक्ष को डिगरी दे दी जाती है। इसी ध्यान में अदालत में पहुँचे अतः जब आप 
अदालत पहुँचे तो पता लगा कि मुकद्दमा का फैसला हो चुका है क्योंकि अदालत का 
फैसला जानना आवश्यक था इसी लिए जा कर पुछा तो पता लगा कि मेजिस्ट्रेट ने जो 
कि एक अंग्रेज था कामजात पर ही फैसला कर दिया तथा डिगरी आप के पक्ष में दी। 
इस प्रकार खुदा ने आप की ओर से भक्तिता की अतः आप इन संसारिक कार्यों में 
इसी प्रकार व्यस्त थे जिस प्रकार एक मनुष्य से ऐसा कार्य करवाया जाए जो वह ना 
कर सकता था कि वह कार्य आपके लाभ का था, क्योंकि आप के पिता जी 
की सम्पत्ति का सुरक्षित होना वाढ़तव में आप की सम्पति का सुरक्षित होना तथा 
क्योंकि आप उनके उत्तराधिकारी थे अतः आप का बुद्धिमान तथा व्यस्त होने पर भी 
इस कार्य में मन ना लगना यह बात स्पष्ट करता है कि आप संसार से पूर्ण रूप से 

* हाथ काम में, दिल अल्लाह की याद में।
अलग थे तथा खुदा ताज़ाला को पाना ही आप का उद्देश्य था।

परिश्रम की आदत

बाबजुद इस के फि आप का मन संसारिक कार्यों में नहीं लगता था आप आलसी नहीं थे बल्कि बहुत अधिक परिश्रमी थे और एकान्त रुबंधाव के होने के बावजूद परिश्रम से चर्चाते नहीं थे तथा कई बार ऐसा होता था कि आप को जब किसी यात्रा पर जाना होता तो यात्रा का घोड़ा नौकर के हाथ आगे भेज देते तथा आप पैदल बीस पच्चिस कोस की यात्रा कर के आप अपनी मज़िल पर पहुँच जाते।

अधिकतर आप पैदल ही यात्रा करते तथा सवारी पर कम चढ़ते थे तथा पैदल चलने की आदत आप को अन्तिम समय तक रही। सत्तर वर्ष से अधिक आयु में जब कि आप को कुछ सख्त बीमारियां* लग गई थीं। अधिकतर प्रतिदिन सैर को जाते थे; चार पांच मील पैदल फिर कर आते थे, तथा कभी सात मील फिर आते थे तथा बढ़ते से पहले के बारे में आप वर्णन करते थे कि कुछ समय प्रातः की नमाज़ से पूर्व उठ कर (नमाज़ का समय सूर्य निकलने से सवार घटना पहले होता है) सैर के लिए चल चढ़ते थे तथा बढ़ाना तक पहुँच कर (जो बटाला सड़क पर कादियान से लगभग साठे पांच मील पर एक गांव है) प्रातः की नमाज़ का समय होता होता था।

मकालम-ए-इलाहिया का आरम्भ

(अल्लाह से बातचीत का आरम्भ)

आप की आयु लगभग चालीस वर्ष की थी जबकि 1876 में आप के पिता जी एक बार बीमार हुए और उन की बीमारी बहुत अधिक भायानक ना थी परन्तु हज़रत मसीह मौज़द को अल्लाह ताज़ाला ने इत्हाम (आकाशवाणी) के द्वारा बताया कि अतारिक्ष व मतारिक अर्थात रात के अने बाले की सौगंध तू क्या जानता है रात को क्या आने वाला है तथा साथ ही बताया गया कि इस इत्हाम (ईश्वर वाणी) में आप के पिता जी की मृत्यु की सूचना दी गई है जो कि मसाई के पंछिचंत होगी। अर्थात शाम के बाद अतः नज़रत साहिब की इस समय से पूर्व ही लम्बे समय से भले

* इस आयु में आपका सर चक्राता था तथा शूर थी।
आप के पिता जी की मृत्यु तथा अल्लाह का आप पर हाथ:

"जब मुझे यह सूचना दी गई कि मेरे पिता जी की सूर्य उबने के पश्चात मृत्यु हो जाएगी तो स्वभाविक तौर पर मुझे इस सूचना के सुनने से दुख पड़ता था। क्योंकि हमारे निवास के अधिकांश साधन उन से ही समन्वित थे तथा वे सरकार अंग्रेजी की ओर पैन्स शर्म प्राप्त करते थे। इस प्रकार एक भारी रकम पुरस्कार के रूप में भी पाते थे जो कि उनके जीवन से ही समन्वित थे। इस कारण यह एक दशा हुआ कि उन की मृत्यु के पश्चात क्या होगा तथा मन में भय पैदा हुआ कि शायद तंगी तथा दुख के दिन हम पर आएगे तथा यह सारा एक दिन की चमक की तरह एक सैकड़े से भी कम समय में गुजर गया तथा उसी समय निद्रा की अवस्था में यह दूसरा इलाहाम हुआ।

अली सल्लाहो बेकाफिन अब्दाहु
अर्थात क्या खुदा अपने सेवक के लिए काफी नहीं है।
इस इलाहाम के साथ दिल ऐसा मजबूर हुआ कि जैसे एक सफेद दुख दायक धाव किसी मरहम से एक दम अच्छा हो जाये। जब मुझे इलाहाम हुआ कि "अली सल्लाहो बेकाफिन अब्दाहु" तो मैं ने उसी समय समझ लिया कि अल्लाह ताआला
जीवन की मृत्यु नहीं जाने देगा तब में ने एक हिंदु खतरी मलाया मल को जो कादियान का रहने वाला है तथा अभी तक जीवित है वह इलाहाम लिख कर दिया तथा सारा फिरसा सुनाया तथा उस को अमृत्सर भेजा कि वह हकीम मौलवी मुहम्मद शरीफ कलानी के द्वारा इस को नगीना में खुदवा कर तथा मुहर बनवा कर ले आए तथा मैं ने इस हिंदु को इस कार्य के लिए केवल इस लिए नियुक्त किया कि वह इस बहुत बड़ी भविष्य वाणी का गवाह हो जाए तथा मौलवी साहिब के द्वारा वह अंगूठी पांच रूपये में बन कर मेरे पास पहुंच गई जो अब तक मेरे पास है तथा जिस का चिन्ह यह है-

अतः जिस दिन हजरत साहिब के पिता जी की मृत्यु हुई उस दिन मारिब (शाम का समय) से कुछ घटने पूर्व इनकी मृत्यु की सूचना आप को दे दी गई तथा बाद में परमात्मा ने धीरज बंधा दिया कि घनाहो नहीं अलवाह ता आला खुद ही तुम्हारा प्रकाश कर देगा जिस दिन यह इलाहाम हुआ उसी दिन शाम को बाद मारिब आप के पिता जी का देहान्त हो गया तथा आप के जीवन का एक नया युग आरम्भ हुआ।

कुछ कठिनाईयां तथा आप की दृढ़ता

आप के पिता जी की सम्पत्ति कुछ मकान तथा दुकानें बटला अन्तर्राष्ट्रीय तथा गुरुदासपुर में थी तथा कुछ मकान दुकानें तथा जमीन कादियान में थी क्योंकि आप दो भाई थे इसलिए इसलामी व मुल्की कानून के अनुसार वह आप दोनों के हिस्सा में आती थी। क्योंकि आप का हिस्सा आप के निवास के लिए काफी था तर्कर आप ने अपने बड़े भाई से सम्पत्ति का बटवारा नहीं कराया तथा जो कुछ वे देते उसी पर निवास करते इस प्रकार पिता के स्थान पर आप के बड़े भाई हो गये परन्तु क्योंकि वे कर्मचारी थे तथा गुरुदासपुर में रहते थे इसी कारण उस समय आप को बहुत कठिनाई हो गई यहां तक कि जीवन की आवश्यक चीजें खरीदने में भी आप को कठिनाई होती थी तथा यह कठिनाई आप को आप के भाई की मृत्यु तक होती रही तथा यह आप के लिए पीढ़ा का समय था तथा आप ने उन दिनों में धीरज से काम लिया वह आप के ऊन्चे दर्जा का खुला निशान है, क्योंकि बाबू इस के लिए फिर भी आप ने उन का संसार से धर्म देख कर उनसे हिस्सा ना मांगा। खाने तथा चप्पे पर ही सबके साथ
निचाह किया। अतः आप के भाई भी अपने स्वभाव के अनुसार आप की आवश्यकताओं को पूरा करने का प्रयत्न करते थे तथा आप से एक सीमा तक प्रेम भी करते थे एवं समान भी करते थे परन्तु बावजूद इस के क्योंकि वे संसारिक कार्यों में लगे थे तथा हजरत साहिब संसार से पूर्ण रूप से अलग थे इसलिए वे आप को संसारिक आवश्यकताओं से अनभिज्ञ तथा आलसी समझते थे तथा कुछ समय इसी बात पर अफसोस भी करते थे कि आप किसी कार्य की ओर ध्यान नहीं देते अत: एक बार किसी अवसर के मंगवाने के लिए बहुत छोटी रकम मंगवाई तो उन्होंने बावजूद इस के कि वे आप की सम्पत्ति पर कच्चा किये हुये थे देने से इनकार कर दिया तथा कहा कि यह अपर्याप्त है! कार्य तो कुछ करते नहीं तथा बैठे-बैठे पुरस्कार तथा समाचार पत्रों का अध्ययन करते रहते हैं। अतः आप के भाई संसारिक कार्यों में व्यस्त होने पर भी आप की आवश्यकताओं को ना रून्य समझ सकते थे तथा ना ही उन को पूरा करने पर ध्यान देते थे जिस के कारण आप को बहुत परेशानी होती ती परन्तु इस से भी अधिक दुःख दयक बात यह थी कि आप के भाई भी अधिकतर कार्यदियान से बाहर रहते थे तथा उन की अनुपस्थिति में उन के अधिकारी आप को कष्ट देने के यतन करते रहते थे।

आपकी तपस्या, और इस्लाम की सेवा

इन्हीं दिनों में आप को बताया गया कि अल्लाह की रजा को प्राप्त करने के लिए आप की कुछ तपस्या की भी आवश्यकता है तथा यह कि आप को रोज़े (ब्रत) रखने चाहिए। इस आज्ञा के अनुसार आप ने लगातार छ: मास के रोज़े रखे तथा अधिकतर ऐसा होता था कि आप का खाना जब घर से आता तो आप उसे गरीबों में बांट देते तथा जब खोल कर घर से खाना मंगवाते तो वहां से इन्कार हो जाता तथा आप केवल पानी पर या ऐसी ही किसी चीज़ पर समय गुजारते तथा सुबह फिर ऐसी ही रोज़ा रख लेते अत: यह फिर यह समय आप के लिए बड़ी कठिनाइयों का समय था जिसे आप ने भीरज से व्यत्ि किया कठिन से कठिन समय में भी आप ने कभी भी सम्पत्ति से अपने अधिकार लेने की मांग ना की ना केवल रोज़े के दिनों में यूं भी आप की आदत थी कि अधिकतर अपना भोजन गरीबों में बांट देते थे तथा कभी कभी एक रोटी का आधार जो एक छोटाक से अधिक नहीं हो सकता आप के लिए
बचता था। आप उसी पर निवाह करते थे कभी कभी केवल चने भुनवा कर खाते थे लेकिन अपने भोजन गरियों में बांट देते थे अतः कई गरीब गरीब आप को साथ रहते थे। दोनों भाईयों की समस्याओं में जमीन आसमान का अंतर था एक भाई की सभा में सब खाते पीते लोग इक्के होते थे तथा दूसरे भाई की सभा में गरीबों तथा जकर रंदों का समूह रहता था जिन को वह अपने थोड़े से खाने में साथ शामिल करता था तथा अपनी जान पर उन को प्राथमिकता देता था।

इसी समय में हजरत मसीह मौजूद अल्लाह-सलाम ने इस्लाम की सेवा के लिए प्रयत्न आर्म्ब किये तथा इसाइयों तथा आर्म्ब के मुकाबले में लेख लिखने आर्म्ब किये जिन के कारण आप का नाम स्वयं ही गुमनामी के अंतरे से निकल कर सम्मान के मैदान में आ गया परंतु आप स्वयं उसी अकेले पत्र में थे तथा बाहर कम निकलते थे तथा मस्जिद के बाहर कम निकलते थे तथा मस्जिद के एक कमरे में जो केवल 5 x 6 फुट लम्बा तथा चौड़ा था रहते थे। और अगर कोई आदमी मिलने को आ जाता तो मस्जिद से बाहर आ कर बैठ जाते या घर में आ कर बैठ रहते अतः इस समय में आप का नाम तो बाहर निकलना आर्म्ब हुआ परंतु आप बाहर न निकले बल्कि उसी ऐकान्त में जीवन व्यतीत करते रहे। इन तपस्याओं के दिनों में आप को लगातार इलहाम होने आर्म्ब हो गये। और कुछ परीक्षा की बातों से समबिन्दुत भी समाचार मिलते रहे जो अपने समय पर पूरे हो जाते तथा आप के ईमान के अधिक होने के कारण होते और आप के मित्र जिन में कुछ हिन्दु तथा कुछ सिख होते थे इन बातों को देख-देख कर चकित होते थे।

विज्ञापन पुस्तक बराहीने अहमदिया

सर्व प्रथम तो आप ने केवल समाचार पत्रों में लेख देने आर्म्ब कर दिये परंतु जब देखा कि इस्लाम के तात्त्विक अपने आक्रमणों में बढ़ते जाते हैं और मुसलमान उन आक्रमणों का मुकाबला ना कर के पीछे हट रहे हैं तो आप के दिल में इस्लाम के प्रेम ने वास्तव में और आप ने अल्लाह तात्त्विक की आकाशवाणी (इलहाम और वही) संदेश के अनुसार मामूल इरादा किया कि एक ऐसी पुस्तक लिखें जिस में इस्लाम की सच्चाई के उन सिद्धांतों का वर्णन किया जाये जिन के मुकाबले में विरोधी विनिमय हों तथा उन को आगे इस्लाम का मुकाबला करने का साहस ना हों।
अगर वे मुकाबला करे तो हर मसलमान उन के आक्रमणों को असफल कर सके इस विचार के साथ आप ने वह समान योग्य पुरस्कार लिखनी आराम की जो बराहीन आहमदिया के नाम से प्रसिद्ध है और जिस का उदाहरण किसी मनुष्य के लेख में नहीं मिलता जब एक हिस्सा लेख का पूर्ण हो गया तो उस को प्रकाशित करने के लिए आप ने विभिन्न स्थानों पर लोगों को प्रेरित किया तथा कुछ लोगों की सहायता से जो आप के लेखों के कारण पहले ही आप की योग्यता के सहमत थे इस का पहला हिस्सा जो केवल विज्ञापन के रूप में था प्रकाशित किया गया।

इस हिस्से का प्रकाशित होना था कि देश में शोर पड़ गया और यद्यपि पहला हिस्सा केवल पुरस्कार का विज्ञापन था परन्तु उस में भी सच्चाई के साबित करने के ऐसे सिद्धांत बताए गए थे कि प्रत्येक मनुष्य जिस ने उसे देखा इस पुस्तक की बढाई को मानने लग गया इस विज्ञापन में आप ने यह भी उच्च स्तर रखी थी कि अगर वे गुण जो आप इलाम के पेश करें। यद्यपि हिन्दी और धर्म का अनुयायी अपने धर्म में दिखा दे या उन का आधा बल्कि चौथा हिस्सा ही अपने धर्म में साबित कर दे तो आप अपनी सब सम्पत्ति जिस का मूल्य दस हज़ार रुपये के करीब होगा उस पुस्तक के रूप में देंगे (यह एक ही मौका है जिस में आप ने अपनी सम्पत्ति से उस समय लाभ उठाया) तथा इलाम के गुणों को प्रमाणित करने के लिए पुस्तक नियुक्त किया ताकि विभिन्न धर्मों के अनुयायी किसी प्रकार मुकाबले में आ जाएं तथा इस प्रकार इलाम की विजय प्रमाणित हो गई।

भविष्यवाणियों और आकाशवाणियों की अधिकता

इस पुस्तक में हज़ार मसीह मौजूद अल्लाहसलाम ने अपने इलाम भी लिखे हैं जिन में से कुछ का उल्लेख करना यहां उचित होगा क्योंकि बाद की घटनाओं से उन के गलत या सही होने का पता चलता है।

"दुनिया में एक नजीर* आया, पर दुनिया ने उसे कबूल नहीं किया तेजस्विते खुदा उसे कबूल करें और बड़े जोरदार हमलों से उसकी सच्चाई जजहर कर देगा।"

(यातीका मिन कुलेफजिन अमीक द्वारा मिन कुलेफजिन अमीक)

"बादशाह तेरे कपड़ों से वरकर दूढ़ें"। ये वह इलाम हैं जो वराहीन अहमदीया

* खुदाई अजायों से डराने बाला।
1884 ई. में प्रकाशित की गई थी जबकि आप संसार में एक असहाय व्यक्ति की स्थिति में थे परन्तु इस परिस्थिति का निकटतम था कि आप की प्रतिष्ठा भारत में दूर-दूर तक फैल गई और बहुत से लोगों की नजरें चराहीन-ए-अहमदिया के लेखक की ओर लग गई फिर यह इस्लाम का खेम्यावा होगा और इसे शाहजहां से बचावा और वे बिचार उन का ठीक था। परन्तु इंसान इसे और रंग में पूरा करने चाहता था। और घटनाे यह प्रमाणित करने वाली थी कि जो लोग इन दिनों इस पर प्राण न्योछावर करने के लिए तैयार हैं वहीं उस के लहू के प्यासे हो जाएंगे और हर प्रकार से उस को हानि पहुँचाने का प्रयत्न करेंगे और आप की स्थिति किसी मानवीय सहायता के सहारे नहीं बल्कि खुदा ताआला के जोरदार हमलों द्वारा निर्मित थी।

आप के भाई साहिब का देहान्त

1884 ई. में आप के भाई साहिब का भी देहान्त हो गया और क्योंकि उन की सत्तान नहीं थी इसलिए उन के उत्तराधिकारी भी आप ही थे परन्तु उस समय भी आप ने उन की विधवा की तस्ली के लिए सम्पत्ति पर अधिकार नहीं किया और उनकी प्रार्थना पर आधा भाग तो मिर्जा सुल्तान अहमद साहिब के नाम पर लिख दिया जिन्हें आप की भाभी ने रस्मी तौर पर गोद लिया हुआ था। आप ने गोद लेने के प्रक्रम पर साफ लिख दिया कि इस्लाम में जाएं नहीं परन्तु भनें मिर्जा गुलाम कादर की विधवा का दिल रखने और तेज़ रेख के लिए अपनी सम्पत्ति का आधा भाग प्रसन्नता से उन्हें दे दिया, और बाकी अधेरे पर भी स्वयं अधिकार न किया बल्कि एक लघु समय तक आप के सम्बन्धियों के अधिकार में रहा।

दूसरा विवाह, लोगों का आपकी ओर खुकाव दावा का ऐलान

भाई साहिब के देहान्त के बाद वर्ष परस्पर, आपने अल्लाह के इलाह के अभीन दूसरा विवाह दिल्ली में किया। क्योंकि बराहीन-ए-अहमदिया प्रकाशित को चुकी थी अब कोई कोई व्यक्ति आप को देखते के लिए आते लगा था और ऋगदियाँ जो संसार से बिलकुल एक किनारे पर है महीने दो महीने परिवार किसी न किसी अतिथि के लिए ठहरने का स्थान बन जाता था। और क्योंकि लोग बराहीन-ए-
अहमदीया से परिचित होते जाते थे इसलिए आप की प्रसिद्धि बढ़ती जाती थी। और यह बराहीन-ए-अहमदीया ही थी जिसे पढ़ कर वह महान व्यक्ति जिस की योग्यता और ज्ञान को मिले और शाने दोनों मानते थे और जिस समूह में वह बैठा था चाहे योग्यता का ही अस्वाद देसियों का अपनी योग्यता का लिखा उन से मनवाता था। आपका आशिक हो गया और स्वयं हजारों का माषूक होने के अतिरिक्त आप का प्रेमी होना उसने अपना गर्व समझा। मेरे भाव आदर्शीय हज़रत मौलाना नूरुद्दीन साहिब से है जो बराहीन-ए-अहमदीया के प्रकाशन के सामय जम्मू में महाराजा साहिब के प्रमुख वैष थे। उन्होंने वहाँ ही बराहीन-ए-अहमदीया पढ़ी और ऐसे मोहित हुए कि अपने अन्तिम समय तक हज़रत साहिब अ. का दामन ना छोड़ा।

बैतातों का आरम्भ और प्रथम बैतात

इस प्रकार बराहीन-ए-अहमदीया का प्रभाव धीरे-धीरे बढ़ना आरम्भ हुआ और कुछ लोगों ने आप की सेवा में प्रार्थना की कि आप बैतात लें परन्तु आप ने बैतात लेने से सदा इनकार किया और यही उत्तर दिया कि हमारे सब कार्य खुदाँ तालाब के हथ में हैं। यहाँ तक कि 1888 ई. का दसम्बर आ गया जब कि आप की इंहाम के द्वारा लोगों से बैतात लेने का आदेश दिया गया और प्रथम बैतात 1889 ई. में दुधियाना नामक स्थान पर जहाँ मियां अहमद जान नामक एक श्रद्धालू थे उन के निवास स्थान पर हुई और सब से पहले हज़रत मौलाना नूरुद्दीन रज़िअल्लाहों अन्हों ने बैतात की और उस दिन लगभग चालीस व्यक्तियों ने बैतात की। इस के पश्चात् धीरे-धीरे कुछ लोग बैतात में शामिल होते रहे।

मसीह मौऊद होने का दावा और उस की घोषणा

परन्तु 1891 ई. में एक और महान परिवर्तन हुआ अर्थात हज़रत मिर्ज़ा साहिब को इल्हाम द्वारा बताया गया कि हज़रत मसीह नासरी अलैहिस्सलाम जिन के दोबारा आने के मुसलमान और मसीही दोनों सर्वथा हैं का देहान्त हो चुका है और। ऐसे फौत हुए हैं कि फिर वापिस नहीं आ सकेंगे। और यह कि मसीह अलैहिस्सलाम के दोबारा प्रकट होने का अर्थ एक ऐसा व्यक्ति है जो उनके गुण लेकर आए और वह आप ही हैं। जब इस बात पर आपको पूरा विस्वास हो गया और बार-बार इल्हाम द्वारा
उस समय के ऊलमा का घोर विरोध लुधियाना में वाद-विवाद

इस घोषणा का प्रकाशित होना था कि पूरे भारत में शोर पड़ गया और इतना अधिक विरोध हुआ कि वही ऊलमा जो आप का पक्ष लेते थे आप के विरुद्ध उठ खड़े हुए।

मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी का विरोध

मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी जिन्होंने अपनी पत्रिका इसातु-युनाना में आप के समर्थन में जबरदस्त आरोपित किया था उन्होंने ही आप के विरुद्ध जमीन और आसमान सिर पर उठा लिये और लिखा कि मैं ने ही इस व्यक्ति को चढ़ाया था और अब मैं ही इसे गिराया। अर्थात मैं ही समर्थन से इन की इन की तुलना में हुई थी और इतना विरोध कहना कि ये लोगों की नजरों से गिर जाएंगे और बदनाम हो जाएंगे। मौलवी साहिब कुछ और मौलवियों के साथ लुधियाना भी पहुंचे।

लुधियाना में वाद-विवाद

और वाद विवाद का चैलेंज दिया जिसे हज़रत मसीह मौजूद अल्लाहसलाम ने स्वीकार कर लिया। परन्तु वाद-विवाद में विरोधी दल ने इस प्रकार फजूल बहसें आरम्भ कर दी कि कुछ फैसला ना हो सका। और जब इन्द्री कमिशनर साहिब ने देखा कि झगड़ा आरम्भ हो गया है और निकट है कि गदार की स्थिति पैदा हो जाए तो उन्होंने मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी को एक विशेष आदेश द्वारा लुधियाना से उसी दिन चले गए पर विवाद तैयार दिया। इस पर कुछ मिनटों के सुझाव से कि शायद ऐसा हुक्म आपके लिए भी जारी हो आप लुधियाना से अमृतसर आए
और आठ दिन वहाँ रहे परलु बाद में डिस्ट्रक्ट मैजिस्ट्रेट साहिब के पूछतांत पर चताया
कि आप के बारे में कोई हमस नहीं था जिस कारण फिर लुभियाना चले गए और फिर
वहाँ एक सप्ताह रहे और फिर कादियाँ बापिस आ गये।

दिल्ली की यात्रा और मौलवी नजीर हुसैन के साथ
वाद-विवाद

इस के पश्चात कुछ समय कादियाँ रह कर फिर लुभियाना चले गए जहाँ कुछ
समय रहे वहाँ से दिल्ली चले गए जहाँ आप 28 सितंबर 1891 ई. की सुबह को
पहुंचे। क्योंकि दिल्ली उस समय में समस्त भारत में झांस का केन्द्र समझा जाता था
वहाँ के लोगों में पहले से ही आप के विरुद्ध जोश फैलाया जाता था आप के वहां
pहुंचते ही वहाँ के उल्लू में एक जोश पैदा हुआ और उन्होंने आपको वाद-विवाद
के लिए चैलेंज देने आरम्भ किए और मौलवी नजीर हुसैन जो समस्त भारत के
उल्लास हदीस में से सबसे योग्य थे उन से वाद-विवाद निष्कित हुआ। जामा मस्जिद
वाद-विवाद का स्थान निष्कित किया गया। परन्तु वाद-विवाद का प्रस्ताव विरोधियों
ने स्वयं ही निष्कित कर लिया और आप को कोई सूचना नहीं दी। उसी समय हकीम
अब्दुल्लाह साहिब देहलवी अपनी गाढ़ी ले कर आ गए और कहा कि मस्जिद में
वाद-विवाद है। आपने फर्माया कि ऐसे झगड़े के अवसर पर हम नहीं जा सकते जब
tक पहले सरकारी प्रबन्ध न हो फिर वाद-विवाद के लिए हम से विचार-विमर्श होना
चाहिए और वाद-विवाद की शर्त निष्कित करनी थी आप के न जाने पर और शोर
हुआ अननत: आप ने घोषणा की कि मौलवी नजीर हुसैन देहलवी जामा मस्जिद में
सौगन्ध खा ले कि हजरत मसीह अल्लाहुस्ताम कुआँ के भावानुसार जीवित हैं
और अब तक मे नहीं और इस सौगन्ध के बाद एक वर्ष तक किसी आसामी
अजाब मे प्रकोप न उतरे तो में झूठा हूँ और में अपनी पुस्तकों को जला दूंगा और
इस के लिए लिथर भी निष्कित कर दी। मौलवी नजीर हुसैन साहिब के विचारों
इस से

बहुत घराये और बहुत रोके डालनी आरम्भ कर दी। लेकिन लोग हट करने लगे कि
इस में क्या हर्ष है कि मिर्जा साहिब का दावा सुनकर सौगन्ध खा ले कि वे झूठा है
और लोग उस समय बहुत अधिक संख्य में जामा मस्जिद में इकट्ठे हो गए। हजरत
साहिब को लोगों ने बहुत रोका कि आप न जाएं बहुत झगड़ा हो जाए। परन्तु आप
बहां गए और आपके साथ बाहर मित्र थे (हजरत मसीह अल्लाहुका बी बारह
ही हवारी थे। इस अकसर पर आपके साथ ते संख्या भी एक निशान थी) जामा
मस्जिद दिल्ली का विशाल भवन अन्दर और बाहर व्यक्तियों से भरा हुआ था बल्कि
सीदियों पर भी लोग खड़े थे। हजरों व्यक्तियों के समूह में से गुजर पर जब कि सब
लोग पागलों की तरह खूब भी नजरों से आप की ओर देख रहे थे आप इतने कोटी सी
जमात के साथ मस्जिद के महराब में बैठ गए।

लोगों के समूह को नियंत्रित करने के लिए सुप्रीम्यूट पुलिस कुछ अन्य पुलिस
अफसरों और लगभग सो कांस्टेबलों के साथ आए हुए थे। लोगों में से अधिकतर ने
अपनी झोलियों में पत्थर भरे हुए थे। और जरा से इंग्रजेः पर पत्थरारों करने को तैयार
थे और दिन रविवार भी प्रथम मसीह की भांति फकिहियों और फरीसियों अर्थात
मौलवियों का शिकार हो रहा था। लोग इस दृश्य मसीह को सूली पर लटकाने की
अपेक्षा पत्थरों से मारने पर तुले हुए थे और वाद-विवाद में तो उन्हें पराजय मिली
मसीह के देहांत पर बहस करना लोगों ने स्वीकार ना किया। लोगों के सभी ने
ख़ाई और न मौलवी नजीर हृदेन को बाबा दी। ब्लाक महम्मद यूसुफ साहिब पलीबर
(कील) अलीगढ़ ने हजरत मसीह मौजूद अल्लाहुका बी आप के सिद्धांत स्वीकार
और सुनने चाहे परन्तु क्योंकि मौलवियों ने लोगों को ते सुना रखा था कि यह
व्यक्ति ना कुरआन को मानना ना हदीस को ना स्वीकार करना सर्कारी अर्थात वस्तुम
को। उन्हें इस धोखे के खुल जाने का भय हुआ इस लिए लोगों को भड़का दिया। फिर
क्या था एक शोर पैदा हो गया और महम्मद यूसुफ को वह कागज सुनाने से लोगों ने
रोके रखा।

अफसर पुलिस ने जब देखा कि हालत खतरनाक है तो पुलिस के समूह को
तिरंगा बिज्ञार करने का आदेश दिया और घोषणा की कि कोई वाद-विवाद नहीं होगा।
लोग तिरंगा बिज्ञार हो गए पुलिस आप के ध्वनि में ते कर बाहर आ गई दरबारी पर
गाड़ियों की प्रतीक्षा में दुर्दर ठहरना शुरू। लोग बहां इटरोट हो गए और जोश में
अंगरक्षण करने का निर्देशन किया। इस पर पुलिस अफसरों ने गाड़ी में सवार कर
कर आप को भेज दिया और स्वच्छ भीड़ को तिरंगा बिज्ञार करने में लग गए।

इस के पश्चात मौलवी महम्मद बशीर साहिब को दिल्ली के लोगों ने भोपाल से
बुलवाया और उन से वाद-विवाद हुआ जिस का पूरा हाल छपा हुआ है।

...........................................
डिप्टी अब्दुल्ला आयम से वाद-विवाद के हालात

कुछ दिन पश्चात् आप वाजप कादियान लौट आए। कुछ महीनों के पश्चात् 1892 ई. में फिर एक यात्रा की। पहले लाहौर गए वहां मौलवी अब्दुल हकीम कलामदीरी से वाद-विवाद हुआ वहां से स्यालकोट और वहां से जलन्धर और फिर वहां से लुधियाना पढ़ारे। लुधियाना से फिर कादियान लौट आए।

मसीहियों से वाद-विवाद “जने मुक्ति”

इस के पश्चात् 1893 ई. हजूर का मसीहियों के साथ वाद-विवाद हुआ। मसीहियों की ओर से डिप्टी अब्दुल्ला आयम निश्चित हुए। यह वाद-विवाद मुबाहिसा अमृतसर में हुआ और पन्नद दिन तक रहा और जने मुक्ति के नाम से प्रकाशित हो चुका है।

इस वाद-विवाद में भी जैसा कि हमेशा आप के विरोधियों को हानि होती रही है मसीही मुनाज्जीन को बहुत हानि हुई और इस का बहुत महत्वपूर्ण असर पड़ा। इस वाद-विवाद के पहले से (यह वाद-विवाद लिखित रूप में हुआ था और दोनों पक्ष आपने सामने वैठ कर एक दूसरे के पर्च का उत्तर देते थे और वह असल एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित की गई है) यह चलता है कि मसीही वाद-विवाद करते वाला आप की जबरदस्त दलितों से तंग आ जाते थे। और बार-बार दावा बदलता। जाता था और कई जगह तो मसीहियों की ओर से अनुचित दुर्वचन तक बोले गए आप ने इस आधुनिक इलम-ए-कलाम को प्रस्तुत किया कि हर एक धर्म की सत्यता के दावे और दलितों अपनी प्रमाणित दस्तावेजों द्वारा प्रस्तुत करें।

एक विचित्र घटना

इस वाद-विवाद में एक विचित्र घटना घटी जिस में मिन्न शत्रु आप को खुदा की तरफ से मिलने वाली योजना और खुदाई समर्थन को मान गये और वह इस्लामी समर्थन के और वह यह कि चाहे बहस दूसरी वातों पर ही हो रही थी मगर मसीहियों ने आपको लज्जित करते के लिए एक दिन कुछ लूटे, लंगरों और अन्य इक्कटे किए और वाद-विवाद के मध्य में आप के समक्ष लाकर कहा कि आप मसीह होने का
दावा करते हैं कि वह तो लूटे, लंगड़ों और अन्यों को अच्छा किया करते थे-इसलिए आप का दावा तब ही सच्चा हो सकता है यदि आप भी ऐसे रोगियों को ठीक करके दिखाएं और दूर जाने की आवश्यकता नहीं रोगी उपस्थित है। जब उन्होंने यह बात प्रस्तुत की तो सब लोग आश्चर्य चकित रह गए और हर एक व्यक्ति आश्चर्य चकित होकर इस बात की प्रतीक्षा करने लगा कि देखें कि मिर्जा साहिब इस का क्या उत्तर देते हैं? और मसीही अपने इस विचित्र कार्य पर बहुत प्रसन्न हुए कि आज इसके सामने न दुःखार जाने बाली दस्तील रखी गई है और भी सभा में कैसी जिल्लत उठानी पड़ी है। परंतु जब आप ने इस मंग का उत्तर दिया तो उन की सारी प्रसन्नता शोक और लझा में परिवर्तित हो और विजय पराजय में बदल गई और तब आप की हाफिज़ जामी और मुनासिब (उचित) उत्तर से लाजवाब हो गए। आप ने परम्परा कि इस प्रकार के रोगियों को अच्छा करना सो इन्जील में लिखा है हम हो इस के समय ही नहीं है बल्कि हमारे निकट हो हज़रत मसीह अल्लाहका के शासन का रंग ही और शाया। ये तो इन्जील का दावा है कि वह ऐसे रोगियों को शारीरिक रूप में अच्छा करते थे और इस प्रकार हाथ फेर कर ना कि प्राथमिक और दुःख से। फिरतु इन्जील में लिखा है कि अगर तुम में ज़रा सा भी ईमान हो तो तुम लोग इस से बढ़ कर विचित्र काम कर सकते हो। इन रोगियों को हमारे सामने प्रस्तुत करना आप लोगों का काम नहीं बल्कि हमारा काम है और अब हम इन रोगियों को जो आप लोगों ने बड़ी कृपा से इकट्ठे किए हैं आप के समक्ष रख कर कहते हैं कि कृप्या इन्जील के आदेशानुसार अगर आप लेंगे में एक राई के दाने के बराबर भी ईमान है तो इन रोगियों पर हाथ रख कर कहें कि अच्छे जाओ अगर यह अच्छे हो गए तो हम विश्वास कर लेंगे कि आप लोग और आप का धर्म सच्चा है वरना जो दावा आप लोगों ने स्वयं किया है उसे भी पूरा न कर सके तो फिर आप की सच्चाई पर किस प्रकार विश्वास किया जा सकता है। इस उत्तर का ऐसा प्रभाव हुआ कि मसीही बिकाल चुप हो गए और कुछ उत्तर ना दे सके और बात टाल दी।

इस के पश्चात् हर्दिय दिनों आप एक बार फिरोजपुर गए इन सभी यात्राओं में आप को लग किया गया और लोगों ने आप को भहत दुःख दिया और जो कुछ लेखनों द्वारा प्रकाशित किया गया इस की कोई हद नहीं जहां आप जाते वहीं लोग मिल कर आप को दुःख देते।

.................................................................
शुक्रवार के अवकाश के लिए कोशिश

एक जनवरी 1896 ई. को आप ने इस्लामी प्रतीष्ठा को व्यक्त करने और नमाज़े जुमा के आम रिवाज के लिए एक प्रयास आरम्भ किया अर्थात् भारत सरकार से शुक्रवार के अवकाश के लिए प्रस्ताव पेश किया। दुर्भाग्य-वश मुसलमानों में शुक्रवार के बारे में जो उनके लिए मसीह मौजूद का एक जबरदस्त निशान था उसी गलत फहमियां पैदा हो गई थी कि कुछ झांकों को उचित गलत कर शुक्रवार की फरजियां पर ही बहस छिड़ चुकी थी और कार्यकारी रूप में जुमा बहुत ख्यात था। आपने उसको जीत दिया और चाहा कि शुक्रवार की कुछ स्वीकार कर दी जा। इस बारे में जो मेमोरियल सरकार की सेवा में भेजना आप ने चुना उस की तैयारी से पूर्व ही मीलबिंदियों ने अपनी आदत के अनुसार बिंदी लगाया और इस कार्य को अपने हाथ में लेना चाहा। हजार मसीह मौजूद अल्लाह की खातिर कर रहे थे आप को किसी प्रकार की प्रस्ताव की इच्छा नहीं थी आप का लक्ष्य तो इस विशेष धार्मिक सेवा का अंजाम पाना था चाहे किसी के हाथ से हो। आप ने सम्पूर्ण कार्य मौलवी मुहम्मद हुसैन बटाली की प्रार्थना पर उन के अधीन कर देने का प्रयोग कर दी कि वह शुक्रवार की छुट्टी के लिए स्वयं प्रयास करने का दावा करते हैं बो करते। मगर अफसोस उन्होंने इस लाभदायक कार्य की इस मार्ग से रोक दिया मगर आप का यह प्रस्ताव इतनी प्रस्ताव था अन्त खुदा तालाब ने आप ही की जमानत के द्वारा उस को पूर्ण किया।

संसार के धर्मों का महान जलसा

1896 ई. के अंत में कुछ लोगों ने मिल कर लाहौर में एक धार्मिक कान्फ्रेंस आयोजित करने का निर्णय किया और इस के लिए सभी धर्मों के समर्थकों को सम्मिलित होने का निम्नांत्रण दिया जिन्होंने बड़ी प्रसन्नता से इस बात को स्वीकार किया। विवाद में शर्त थी कि किसी धर्म पर आक्रमण ना किया जाए और निम्नलिखित पंच शर्तों पर विभिन्न धर्मों के अनुयायियों से लेख लिखने की प्रार्थना की गई:

1. मनुष्य की शारीरिक, चारित्रिक और अध्यात्मिक स्थितियां।
2. मनुष्य में जीवन के बाद की हालत।
3. संसार में मनुष्य के अस्तित्व का वास्तविक उद्देश्य क्या है और वह किस प्रकार पूरा हो सकती है?
4. कर्म का प्रभाव संसार व आंगली दुनिया में क्या होता है।
5. झान और मारफत के साधन क्या क्या है।

इस कार्यस्तर का निर्णायक हज़रत अल्लाहुस्लाम की रेखा में भी कादियान उपस्थित हुआ और आप ने हर प्रकार से उन के समर्थन का वचन दिया बल्कि सबी अर्थों में इस कार्यस्तर की नींव स्वच्छ हज़रत मसीह मौलाद अल्लाहुस्लाम ने ही रखी थी जो व्यक्ति बाद में कान्यांस का निर्णायक बना कादियान आया तो हज़रत अल्लाहुस्लाम ने यह योजना प्रस्तुत की थी। क्योंकि आप का लक्ष्य संसार को इस संज्ञान से परिवर्तित कराना था जो आप ने कर आए थे और आपके किसी भी कार्य में दिखाया नहीं होता था इसलिए आप ने उस व्यक्ति को इस कर्म को प्रयास करने पर तैयार किया और इस का पहला इतिहास (बिज्ञापन) कादियान में ही छाप कर प्रकाशित कराया आपने एक मुरीद को नियुक्त किया कि वह हर प्रकार से उन की सहायता करें और स्वच्छ भी लेख लिखने का वचन दिया। जब आप लेख लिखने लगे तो आप बहुत बीमार हो गए और दस्तों की बीमारी शुरू हो गई परिस्तु इस बीमारी में भी आप ने एक लेख लिखा और जब आप वह लेख लिख रहे थे तो आपको इलाहम हुई कि “मज़बूत बाला रहा” (लेख सर्वश्रेष्ठ रहा) अर्थात आप का लेख इस कार्यस्तर में दूसरों के लेखों से सर्वश्रेष्ठ और उत्तम रहेगा। इस प्रकार आप ने अभी से पूर्व ही एक बिज्ञापन द्वारा ये बात प्रकाशित कराये कि मेरा लेख सर्वश्रेष्ठ रहेगा।

समारोह 26-27-28 दिसंबर 1896 ई. को निर्दिष्ट थे। सम्मेलन के प्रबंध के लिए माइडेटर साहिबज़ान थे जिन के नाम निम्नलिखित हैं:-
1. राय बहादुर प्रतूल चन्द्र साहिबज़ा जज़ साहिबज़ा नॉर्थ पंजाब।
2. खान बहादुर शेख खुदा बक्सा साहिबज़ा जज़ स्माय कॉक्ज़ कोर्ट वाहायर।
3. राय बहादुर पंडित राधा कृष्णाकोल पलाड़र चीफ कोर्ट मूर्तपूर्व गवर्नर जनरल जम्मू।
5. राय बहादुर भवानी दास ए-ए स्टेलमेन्ड्र आफिसर जेहलूम।
6. हज़रत मोलिस हकीम मुर्शीद साहिबज़ा राज वैब्ल।
7. सरदार ज्ञानप्रीति साहिब सेन के बालसाहब कॉलेज कमेटी तालाबी

इस कान्फ्रेंस के लिए विभिन्न धर्मों के प्रसिद्ध साहिबों ने लेख तैयार किए थे। इस कान्फ्रेंस के लिए लोगों में इस के सम्बन्ध में बड़ी रुचि थी और बहुत चाहे से भाग लेते थे और यह सम्मेलन एक धार्मिक दमन का रूप धारण कर गया था और प्रत्येक धर्म के नामक वाले अपने अपने प्रतिनिधियों की विजय देखने के इच्छुक थे। इस स्थिति में सभी पुराने धर्म जिन के नामक वाले अधिक संख्या में जमे ले चुके हैं विकृत उल्लिखित थे क्योंकि उन की दाद देने वाले लोग सम्मेलन में बहुत अधिक पाए जाते थे किन्तु मिर्ज़ा साहिब का लेख एक ऐसे सम्मेलन में सुनाया जाना था जिस में मिर्ज़ा नाममात्र थे और सब मुख्य साहिब ही मुख्य हो थे क्योंकि उस समय तक आप की जमात दो तीन से अधिक नहीं थी उस सम्मेलन में तो शायद पता नहीं या अधिक आदमी भी समिलित न होंगे।

आप का भाषण 27 दिसम्बर को देख बजे से साढ़े तीन बजे तक था आप स्वयं तो इसका जा सके थे परन्तु आप ने अपने एक शिष्य मौलवी अब्दुल करीम साहिब को अपनी ओर से लेख पढ़ने के लिए नियुक्त किया था। जब उन्होंने भाषण आरम्भ किया तो थोड़ी ही देर में ऐसा हुआ हो गया कि मानों लोग बुल बने बैठे हों और समय के समाप्त होने तक लोगों को पता ही ना चला कि आप कितने समय तक बैठे रहे हैं। समय समाप्त होने तक लोगों को काफी चिंता दुःख था क्योंकि आप के लेख का अभी पहला प्रश्न ही समाप्त न था हुआ था और उस समय लोगों की प्रसन्नता की कोई सीमा न रही जबकि मौलवी मुबारक अली साहिब स्तालकोटी ने जिन का भाषण आप के बाद था धोखा की कि आप के लेख का समय भी हजार साहिब को ही दिया जाए इस प्रकार मौलवी अब्दुल करीम साहिब आप का भाषण पढ़ने चले गए यहां तक कि साढ़े चार बजे गए जब कि सम्मेलन का समय समाप्त होना था परन्तु अब भी पहला प्रश्न समाप्त न हुआ था और लोग आघात थे कि इस लेख लोग समाप्त न किया जाए। इस प्रकार सम्मेलन के प्रश्न-विषयों ने धोखा की कि समय का ध्यान न रखते हुए थे लेख जारी रहे। जिस पर साढ़े पांच बजे तक सुनाया गया तब जाकर पहला प्रश्न समाप्त हुआ। लेख के समाप्त होते ही लोगों ने हठ किया कि इस लेख के समाप्त करने के लिए सम्मेलन का एक दिन और बढ़ाया जाए। इस प्रकार 28 तारीख के प्रोग्राम के अतिरिक्त 29 तारीख को भी सम्मेलन का प्रवन्ध
फिया गया। और इस दिन क्योंकि कुछ और धर्मों के प्रतिनिधियों ने भी समय की 
प्रार्थना की थी इस लिए समेतन की कार्यवाही साढ़े दस बजे के स्थान पर साढ़े नौ 
बजे से आराम होने की घोषणा की गई और सब से पहले आय था जो वर्तु आय के पहले 
दिन के लेखक का ये प्रभाव था कि अभी 9 भी नहीं बजे थे कि प्रत्येक धर्म के 
लोगों के समूह समेतन में एकजुट होने आराम हो गए और ठीक समय पर समेतन 
आराम्भ किया गया उस दिन भी चाहे आय के लेख के लिए बाद के दिन गए थे। 
प्रत्येक धार्मिक एक समय न हो सकने के कारण प्रचरणों को समय 
और देना पड़ा क्योंकि वहीं उपस्थित लोग एक साथ मिल कर इस धार्मिक को आराम 
रखने पर आय थे। इस प्रकार मैण्डेट महाद्य और के समय बढ़ा तड़ दिया गया। दो दिनों के 
लगभग सप्ताह घटनाओं में जाकर ये धार्मिक समाप्त हुआ और पूरे लाहौर में एक शीर 
पड़ गया और सब लोगों ने स्वीकार किया कि मिज़ा साहिब का लेख सर्वोत्तम रहा 
और प्रत्येक धर्म के समर्थक इस की अच्छाई के समर्थक हुए। समेतन रिपोर्ट बनाने 
वालों का अनुमान है कि आय के लेखकों के समय दिनों की संख्या बढ़ते-बढ़ते 
सात आठ हज़ार तक पहुँच जाती थी। ये लेखक एक महान विज्ञान थी जो आय को 
प्राप्त हुई और उस दिन आय का सिक्का आयके तत्वों के दिलों पर और भी बैठ 
गया और स्वयं निर्देश समाचार पत्रों ने इस बात को स्वीकार किया कि आय का 
लेख इस काराफ़स में सर्वोत्तम रहा। ये लेख वही है जिस का अंग्रेजी रूपांतर 
"टीविंग ऑफ इस्लाम" यूरोप और आयरिया में विशेष रूप से प्रसिद्ध प्राप्त कर 
चुका है।

1897 ई. के आराम के साथ इससे संसार पर अत्यन्त हुज्जज के लिए एक 
और लग प्रस्तुत किया और हज़ार मसीह अलैहिसलाम के वास्तविक व्यक्तित्व को 
प्रमाणित करने के लिए ईसाईयों के गलत सिद्धान्तों के सुधार के लिए चालिस दिनों के 
मुकाबले का एलान किया चाहे इस प्रतियोगिता में दूसरे धर्मों के समर्थक भी 
सम्मिलित थे मगर ईसाई विशेष रूप से सम्मोहित थे। इस के साथ एक हज़ार र. का 
पुरस्कार भी उस व्यक्ति के लिए निदानित था जो यसू की पेशायों को हज़ार 
मसीह मौजूद अलैहिसलाम की भविष्यवाणियों और निजियों से कविताशाली दिखा 
सके मगर किसी को हिम्मत नहीं हुई।
लेखराम के कल्ल की घटना

1897 ई. में लेखराम नामक एक आर्य 6 मार्च को आप की भविष्यवाणी के अनुसार मारा गया और उस पर आर्यों में बहुत शोर मचा और कुछ उद्विदियों ने भिन्न भिन्न प्रकार से अहमदियों और फिर उन के साथ दूसरे मुसल्मानों को भी कष्ट देना आरम्भ किया और हजरत मसीह मौजूद के विरुद्ध तो बहुत अधिक शोर हुआ और स्पष्ट शब्दों में आप पर कल्ल का आरोप लगाया गया और तत्काल ही आप की तलाशी ती गई कि शायद कोई चिन्ह कल्ल का मिल जाए परन्तु ईश्वर ने मुखालिफों को हर प्रकार से असफल रखा। और बाबुजूद इस के कि हर प्रकार से आप पर आरोप लगाने का प्रयास किया गया किन्तु फिर भी सफलता न मिली और आप इस आरोप से विलुकुल पत्र प्रमाणित हुए।

हुसैन कामी रूमी दूत का कादियान में आना

मई 1897 ई. में महान घटना का आरम्भ हुआ जो इतिहास में एक निशान के रूप में रहेगा। हुसैन कामी रोम का दूत अपनी अंशक व्यक्तियों के पश्चात हजरत मसीह मौजूद अलेहिस्सलाम की सेवा में कादियान उपस्थित हुआ हजरत ने अपनी ईश्वरीय प्रतिभा और ईश्वरीय सूचना पर उसकी अपनी हालत और तुर्की पर अने वाले संकायों से सूचित किया क्योंकि चर्चित राजदूत ने रोम के राज्य से समन्वित एक विशेष प्रार्थना की थी जिस पर आप ने उस को साफ कह दिया कि मुल्तान (रोम के राजा) के राज्य की स्थिति अच्छी नहीं है और में कश्मीर तौर पर इस के सदस्यों की स्थिति अच्छी नहीं देखता और मेरे निकट इन स्थितियों के साथ अन्जाम अच्छा नहीं।

इन बातों से उपस्थित दूत रूप से कर चला गया और लाहौर के एक समाचार पत्र में गंगी गलियों का एक पत्र छपकर जिस से भारत और पंजाब के मुसल्मानों में शोर मच गया मगर बाद में घटने वाली घटनाओं के चालु दिया इस के अन्तर्गत बहुत सी भविष्यवाणियां पूरी हो गई। स्थाय उपस्थित दूत हजरत के प्रसिद्ध इलाहाबाद ईश्वर मुईनुद्दीन मन अरादा इहानका का निशान बना क्योंकि वह एक संगीत आरोप में पकड़ा जा कर दण्डित किया गया और जिस समाचार पत्र
मुक्ति मार्टिन कलार्क

इसी तारीख को जब आप के चिन्ता का अनुभव करना पड़ा, मार्टिन कलार्क नामक एक ग्रीकी पारदर्शी ने मुक्ति साध्न कल्याण स्थल निभाया था। इसी तारीख को जब आप के चिन्ताभरे ने मुक्ति साध्न नामक एक व्यक्ति के लिए मरे कत्त करने के लिए भेजा था। पहले तो इसी कमान करने के लिए जिले के कारण थे बात उन के दिन थे। इसलिए मुक्ति कलार्क ने आप के नामक ग्रीकी वाल्टर सिरिका विन्था बाद में उनको पता चला कि फिरस और जिले के चार के कारण थे बात उन के अधिकार से बाहर है। इसलिए मुक्ति कलार्क ने आप के नामक ग्रीकी वाल्टर सिरिका विन्था बाद में उनको पता चला कि फिरस और जिले के चार के कारण थे बात उन के अधिकार से बाहर है।

* आप के सामने भी अन्तर्निहित ने यहीं कहा कि यहाँ मिर्जा साहिब ने मार्टिन कलार्क साहिब के कत्त के लिए भेजा था और यहाँ कि एक बड़े पत्थर से इन को मार दो। परन्तु क्योंकि इस गवाही में जो उस ने दिस्क्राक म्यूजिस्ट्रेट अमुन्तर के सामने दी थी और उस में जो आप के सामने दिया कुछ अन्तर था इस लिए आप को कुछ शाक पड़ गया और आप ने बड़े जोर से इस काम की ज्ञान बीन आरम्भ की और चार ही पेटियों में 27 दिन के अन्तर मुक्ति का निर्णय कर दिया और बावजूद इस के फि आप के मुकाबले पर एक मसीहा जमात थी धार्मिक पत्थर किया जिन हजार मसीहा मौजूद अल्लाह-स्वरूप के पक्ष में निर्णय दिया और आप को साफ बना कर दिया बल्कि आज़ा दी के अपने विरोधियों के चिन्ता मुक्ति दारार करने परन्तु आप ने उन को क्षमा कर दिया और उन पर कोई मुक्ति ना किया। दिस्क्राक म्यूजिस्ट्रेट साहिब अपना निर्णय देते हुए लिखते हैं- “हम ने उस का ब्याख्या कुनते ही उस को अकल से दूर समझा क्योंकि प्रथम तो उस का ब्याख्या जो हमारे सामने हुआ तो उस ब्याख्या से भिन्न था जो अमृतसर के दिस्क्राक म्यूजिस्ट्रेट साहिब के सामने हुआ। इस के अतिरिक्त उस की चाल ढाल ही संदेह जनह थी। दूसरे हम ने उस की गवाहियों में विचित्र बात देखी。

* अब कैप्टन डगलस साहिब का देहात ही चुका है।
कि जितनी देर वह बदलाल में भीमान के कर्मचारियों के पास रहा उस का ब्यान लम्बा होता गया इस प्रकार उस ने एक ब्यान 12 अगस्त को दिया और एक 13 अगस्त को और दूसरे दिन के ब्यान में विस्तार बढ़ गया जो पहले दिन के ब्यान में नहीं था। इसलिए इस से हमें सन्देह हुआ कि या तो इसे कोई सिखाता है या इसे बहुत कुछ पता है जिसे वह प्रकट नहीं करना चाहता। इस लिए हम ने साहिब सुपीटेंडेंट पुलिस को कहा जो एक योरियन आफिसर थे कि इस को मिशन कम्पाउंड से निकल कर अपनी हिरासत में रखो और पिर ब्यान लो। उन्होंने उसे मिशन के कर्मचारी से निकाल लिया और जब आप ने उससे ब्यान लिया तो बिना किसी वादामाफी के उस रो कर पांव पर गिर गया और कहा कि मुझे डरा कर ये सब कुछ कहलवाया गया हूँ। और आत्महत्या के लिए तैयार था और वास्तव में जो कुछ मैंने मिर्ज़ा साहिब के विरुद्ध कहा है उस अवसर तक साहिब ने मेरा अपने अधिक वादामाफी ही नहीं वादामाफी और मेरे साथ यथार्थ के लिए तैयार था और मेरे उससे कोई समझदार था इस प्रकार जो कठिनाई एक दिन के ब्यान में आती दूसरे दिन ये मुझे सिखा देते और मिर्ज़ा साहिब के जिस शिक्षा के बारे में मैंने कहा है कि इस ने कल्यन के पश्चात भी भुगल की थी। उसके चहे से भी मैं निर्भर नहीं। ना उस का नाम सुना था। उन्होंने भर्ती ही उस का नाम और पता मुझे याद कर दिया और इस भय से कि मैं भूत ना जांच मेरी हथेली पर पेशेल से नाम शिक्षा दिया था कि इस समय देख लेना और ये भी कहा कि जब पहले मुझे मिर्ज़ा साहिब के विरुद्ध ब्यान लिखवाया तो इन ईसाईयों ने प्रसन्न होकर कहा कि अब हमारा उदेश्य पूरा हुआ। (अर्थात् अब हम मिर्ज़ा साहिब को फसाड़ेंगे।)

यह सब कुछ विस्तारपूर्वक लिख लिख कर मैजिस्ट्रेट साहिब बहादुर ने आप को बताया। इस मुकहामा पर आप के उपरोक्त इस्तेमाल के लिए एक आरोप चकित ने दिया पैसे को इस में मसीहियों की ओर से पैसी की और मुसलमान औरेकी भी आप के विरुद्ध गवाही देते आए। इस प्रकार मसीहियों, हिन्दू और मुसलमानों ने मिल कर आप पर हमला किया और कुछ अनुचित धमनी भी प्रयोग किये गए पर्याप्त ईसाई ने कप्तान मुलाकात को पलामुत्स से हि अधिक हिम्मत और धैर्य दिया। उन्होंने उस अवसर पर यही कहा कि मैं वे मुसलमान नहीं कर सकता। और ये नहीं कहा कि अपने हाथ घो जरूर मसीह मुलाकात की उस के शारुओं के हाथ में दे देते बल्कि उन्होंने आप को बताया।
और इस प्रकार रोमन राज्य पर ब्रिटिश राज्य की सर्वोच्चता साधित कर दी।

उन्हीं दिनों में आपने अस सुलो हैर* के नाम से एक विज्ञापन प्रकाशित करके मुसलमान उल्लम के समक्ष गुजार प्रस्तुत किया कि वह आप का विरोध करना चाहें और आप को विरोधियों को सामना करने दें और इस के लिए दस वर्ष का समय निर्धित किया कि इस निर्धित समय के अन्दर अगर मैं झूठा हूँ तो स्वतंत्र तबाह हो जाऊँगा और अगर सच्चा हूँ तो तुम प्रयोग से बच जाओगे जो सच्चों के विरोध के कारण खुदा तालाल की ओर से प्रकट होता है। परन्तु मुसलमानों ने इस को स्वीकार न किया और इस्लाम के विरोधियों से मुकाबला करने के बजाए अपने सी ही मुकाबला करना स्वीकार किया।

एक यात्रा

अक्टूबर 1897 ई. में आप को एक गवाही पर मुल्तान जाना पड़ा। वहाँ गवाही दे कर जब वापस लौटे तो कुछ दिनों ताहीर भी ठहरे। यहां जिन्होंने गलियों से आप गुजरते उन में लोग आप को गलियां देते और पुकार-पुकार कर धूरे शब्द आप की शान में से कहते। मैं उस समय आठ वर्ष का था और मैं भी इस यात्रा में आपके साथ था। मैं इस विरोध का जो लोग आप से करते ते कारण तो नहीं लगता था इस लिए ये देख कर मुझे आसचर्च होता कि जहां से आप गुजरते हैं लोग आप के पीछे कुछ तालियां पीटते हैं सीटियां सजाते हैं। मुझे याद है कि एक दुन्दा व्यक्ति जिस की एक कहानी कई हुई थी और बाकी हाथ पर कपड़ा बांधा हुआ था ये नहीं पता कि हाथ करने का ही जरूर बाकी ता या कोई नया धाव था वह भी लोगों में उपस्थित हो न कर शायद मस्जिद बनी खान की सीढ़ियों पर खड़ा तालियां पीटता और अपना कटा हुआ हाथ दूसरे हाथ पर मारता था और दूसरों के साथ मिल कर शोर मचा रहा था कि “हाय! हाय मिर्जा नठ गया” अर्थात् (भूमान से भाग गया) और मैं इस दृष्टि को देख कर बहुत हैरान था विशेष रूप से उस व्यक्ति पर और देर तक गाढ़ी से सर निकाल कर उस व्यक्ति को देखता रहा। ताहीर से हज़रत साहिब ने फिरियां पढ़ाए।

* ऐकता में भलाई है।
पंजाब में प्लेग (ताऊन) और हज़ूर अलैहिस्सलाम की पूर्व सावधानियाँ

उसी वर्ष पंजाब में प्लेग पूटा और जब कि सभी धार्मिक व्यक्ति उन प्रयत्नों के कठोर विरोधी थे जो सरकार ने प्लेग के रोकने के लिये लागू की थी आप ने बड़े जोर से उन का समर्थन किया और अपनी जमात को सूचित किया कि इन प्रयत्नों को अपनाने में कोई हरज नहीं बल्कि इस्लाम का आदेश है कि हर प्रकार के प्रयत्न जो सुरक्षा से समावेशित हो उन को अपनाया जाए और इस प्रकार आप ने लोगों में शातिर की स्थापना में बहुत बड़ा काम किया। क्योंकि उस समय लोगों में आम तौर पर ये बात फैलाई जाती थी कि सरकार स्वंय ही प्लेग फैलाती है और जो प्रयत्न उस की रोक थाम के लिए किये जाते हैं वह असल में इस बीमारी को फैलाने वाले हैं और इस्लाम के भी विरुद्ध है। इस प्रकार उनका ने बड़े जोर के साथ फतवा दे दिया था कि प्लेग (ताऊन) के दिनों में घरों से निकलना गर्दाएँ पाप है और इस प्रकार हजारों अनपढ़ों की मौत का कारण बने चूहे मारने की गोलियां बांटी गई तो उन्हीं को प्लेग का कारण बताया गया। पिछले दिन ब्रह्मांड में उन का भी विरोध किया गया। इस प्रकार वह मचा हुआ था और कुछ स्थानों पर सरकारी अधिकारियों पर आक्रमण भी हुआ। ऐसे समय में आपकी घोषणा आप के कार्य को देख कर दूसरे लोगों को भी हिदायत हुई और आप ने मुसलमानों को सूचित किया कि प्लेग के दिनों में घरों से बाहर निकलना और चरसी के साथ निकलना इस्लामी कानून से मना नहीं बल्कि मना केवल ये बात है कि एक शहर से भाग कर दूसरे शहर में जाए क्योंकि इस से बीमारी के दूसरों शहरों में फैलने का भय होता है।

कानून-ए-सदेशन पर गर्वन्मेंट को मेमोरियल और सुझाव

ये दिन धार्मिक वाद-विवाद के कारण बहुत खतरनाक हो रहे थे और 1897 ई. और 1898 ई. विरोध रूप से प्रमुख थे। आपसी विरोध बढ़ रहा था और फसद करने वाले इस धार्मिक शब्दों का लाभ उठा कर सरकार के विरुद्ध लोगों को उकसाने में लो हुए थे और इसी शारिर को अनुभव करके सरकार ने 1897 ई. में सदेशन का
कानून की पूरी तरह तथा पर्याप्त इस कानून के बच्चों भारत शासन से अपनान्ति की और जा तथा और इस कानून का कोई अच्छा परिणाम न निकला था। क्योंकि भारत एक धार्मिक देश है और यहाँ के लोग जितने धर्म के सम्बन्ध में जोश में आ सकते हैं उन्हें राजनीतिक कार्यों में नहीं आते। परन्तु इस कानून में धार्मिक लड़ाई झगड़ों का विशेष नहीं किया गया था और ना इस की आवश्यकता सरकार उस समय अनुभव करती थी। मगर जिस बात को सरकारी कूटनीतिज्ञ इस समस्या से नहीं हआ और मसीह मौजद अल्लाहुआला एक एकता स्थान में बैठे उसे देख रहे थे। इस प्रकार सितंबर 1897 ई. में एक मेमोरियल तैयार करके लाई ऐल्तान बहादुर बाःस राय हिन्दु की सेवा में भेजा और उसे छाप कर प्रकाशित भी कर दिया उस में आप ने हिज एक्सप्रेसी को बताते कि दोनों फसलों का असली कारण धार्मिक झगड़े हैं इन के परिणामस्वरूप जो थे लोगों के दिलों में उत्पन्न होता है उसे कुछ शर्तात लोग सरकार के विरुद्ध प्रयोग करते हैं। अतः कानून संदेश में धार्मिक अपवाद को भी प्रविष्ट करा चाहिए और इसके लिए अपने तीन सुझाव प्रस्तुत किए हैं।

1. प्रथम ये कि कानून पास कर देना चाहिए कि हर एक धर्म के अनुयायी अपने धर्म की अन्य घटनाओं तो एक धर्म प्रस्तुत करने पर दूसरे धर्म पर हमला करने की उनका अनुमान न हो। इस कानून से तीन अन्य धार्मिक स्वतंत्रता में अंतर आएँ और न किसी बिशेष धर्म का सम्बंध होगा। और कोई कारण नहीं कि किसी धर्म के अनुयायी इस बात पर न खुश हों कि उनको दूसरे धर्म पर हमला करने की इजाजत नहीं दी जाएँ।

2. यदि वे विधि स्वीकार न हो तो कम से कम ये किया जाए कि किसी धर्म पर ऐसे आक्रमण करने से लोगों को रोक दिया जाए जो स्वच्छ उनके धर्म पर पड़ते हैं। अर्थात् अपने विरोधियों के विरुद्ध वह ऐसी बातें प्रस्तुत न करे जो स्वच्छ उन के ही में धर्म हो।

3. अगर वे भी पसंद न हो तो सरकार हर एक फिल्में से पूरी कर उसकी प्रभावी धार्मिक पुस्तकों की एक सूची तैयार करें। और वे कानून पास कर दिया जाए कि इस धर्म पर उन पुस्तकों से बाहर कोई अलोचना न की जाए क्योंकि जब आलोचना की नीबु केवल विचारों या कथनों पर हो जिन्हें इस धर्म के अनुयायी स्वीकार ही नहीं करें तो फिर उनके अनुसार विरोध करने का परिणाम आपसी शान्ति
हिद्याको पीढ़ा देने वाली एक किताब

1898 ई. में एक ईसाई मुरद (अपने धर्म को छोड़ देने वाला) ने हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहू अल्लाह के अपने पश्चिम पत्तियों के बिरुद्ध एक हिद्याको पीढ़ा देने वाली पुस्तक* प्रकाशित की जिससे मुसलमानों में एक जोश उत्पन्न हो गया।

हज़रत मसीह-ए-मोजद अलीहस्सलाम ने इसकी सहीत प्राप्त बातों के लिए दिन वर्चस गया। लकीरी की एक अनुमान ने सरकार के तममुख इस पुस्तक के ज्ञात करने के लिए मैमोरियल भेजने की तैयारी की। लेकिन आपने मना कर दिया कि इसका परिणाम लाभप्रद न होगा। ओरं सुझाव दिया कि इसका एक जबरदस्त उत्तर दिया जाए। मगर

* यह हिद्याको पीढ़ा देने वाली किताब उम्माहातुल मोमिनीन (मोमिनों की माता) एक ईसाई डॉक्टर अहमद शाह मुरद में प्रकाशित की थी।
अन्नुमान वालों ने इस सुजात का आदर न किया। जिस पर उन्हें ऐसे ही असफल होना पड़ा जिस तरह आपने उनको समय से पूर्व बता दिया था स्वंय हजरत मसीह-ए-मीौद ओलैहिस्सलाम ने इस मैमोरियल का खुले आम विरोध किया। क्योंकि सैद्धांतिक रूप से इस मैमोरियल का अंत मंजूरी की सूचना में यह था कि इस्लाम की कमजोरी प्रमाणित हो। आपने उत्तर देने की विधि की प्राथमिकता दी और सरकार ने आपके मैमोरियल को सम्मान की दृष्टि से देखा। इस तरह आपने मुसलमानों के उचित अधिकार की सुरक्षा की। जो इन्हें इस्लाम के प्रचार और अपने मजहबों के विरुद्ध लिखनेवालों के उत्तर देना का था।

जमात को क्रम बदल करना और विरोधियों की असफलता

इसी वर्ष आपने अपनी जमात के बंधन को मजबूत करने और सिलसिले की अच्छाइयों को कार्य करने के लिए जमात के पती पत्नी के अच्छे सम्बन्धों और प्यार के माहौल की तहीत की और जमात को हिदायत फरमाई और जमात को निर्देश दिया फिर अहमदी अपनी लड़कियों गरू अहमदी लोगों को न दिया करे।

इसी वर्ष सरकार को भी आपने खुदाई निशान दिखाने का न्योता दिया।

दरअसल इसी के द्वारा आपको सरकारी कार्य करताओं पर अपने प्रचार का कार्य पूर्ण करना उद्देश्य था जो पूर्ण ढंग से मुकम्मल हो गया।

1898 ई. में आपने अपनी जमात के बच्चों के लिए एक हाई स्कूल की नींव रखी। जिसमें अपनी जमात के विद्यार्थी चारों ओर से आकर पर्दे। जिसका उद्देश्य यह था कि दूसरे स्कूलों के प्रभाव से सुरक्षित रहें। पहले वर्ष ये स्कूल सिर्फ प्राइमरी तक था। लेकिन हर वर्ष उन्मति करता चला गया और 1903 ई. में मैट्रिक्यूलेशन की।

1. ताहार की अन्नुमान से “अन्नुमान हमारे इस्लाम लाहोर” मुराद है।
2. हजरत मसीह मीौद ओलैहिस्सलाम ने 4 मई 1898 ई. को लॉफरिंस्ट गवर्नर पंजाब के पास यह मैमोरियल भेजा था कि जब हजर महाराणी इस किताब की मुसलमानों में मुक्त बांट कर उन का दिल दुखाया गया है तो इस का जब्त करना व्यर्थ है पादरियों ने ऐसी हजारों किताबें लिख कर मुसलमानों का दिल दुखाया है बाद बिचार के इस ढंग में मुथुर होना चाहिए और इस प्रकार की दिल दुखाने वाली अपवाद बातों के यॉयोग से By order रोक देना चाहिए।
परीक्षा में इसके लड़के शामिल हुए।
1899 ई. में आप पर एक और मुकदमा अज्ञाति के सम्बन्धित आपके दुश्मनों ने कायम किया। लेकिन इसमें भी आपके दुश्मन अपमानित और असफल हुए और आपको सफलता हुई।
1900 ई. में आपने ईसाई धर्म पर एक वाद-विवाद किया अर्थात आपने लाहौर के विश्व साहित्य की खुदाई फेस्तले का न्योता दिया। देश के महाशक्तियों ने इस आन्दोलन के बारे में लिखा मार, विश्व साहित्य इस मुकदमा में न आ सके।

जमाजत का नाम अहमदी रखना

1901 ई. में जनगणना होने वाली थी इसलिए, 1900 ई. के अंतिम वर्षों में आपने अपनी जमाजत के नाम एक घोषणा पत्र प्रकाशित किया कि हमारी जमाजत के लोग जनगणना के समय आपने आपको अहमदी मुसलमान लिखाए। इसी वर्ष आपने अपनी जमाजत को अहमदी का नाम देकर दूसरे मुसलमानों से प्रमुख कर दिया।

दीवार गिराने से सम्बन्धित मुकदमा

इसी वर्ष आपके विरोधी सम्बन्धियों ने आपको और आपकी जमाजत को दु:ख देने के लिए मस्जिद के दरवाजे के आगे एक दीवार बना दी जिसके कारण नमाजियों को बहुत दूर से होकर आना पड़ता था और इस तरह बहुत तकलीफ होती थी। जब बह फिर से न माने तो मजबूर होकर जुलाई 1901 ई. में आपको न्यायालय में दावा करना पड़ा और उसी वर्ष अगस्त में उस मुकदमे का फैसला आपके पक्ष में हुआ और दीवार गिरा दी गई और मुकदमे का खर्च भी आपके विरोधियों पर दाला गया लेकिन आपने उनकी क्षमा कर दी।

रिव्यू ऑफ रिलीजन का प्रारंभ

1902 ई. में आपने यूरोप में इस्लाम के प्रचार के लिए एक मासिक पत्रिका प्रकाशित करने का हुक्कम दिया जो रिव्यू ऑफ रिलीजन के नाम से अल्लाह की कृपा से अब तक प्रकाशित हो रही है। इसका एक पहेला अंग्रेजी और एक उर्दू में निकलता है। इस रिव्यू के द्वारा अमेरिका और यूरोप में बहुत अच्छे तरीके से इस्लाम
का प्रचार हो रहा है और इसके जवाबदेश निबन्धों की मित्रों व दुस्मों दोनों मे प्रशंसा की है प्रारम्भ में जमात के दूसरे सदस्यों के अतिरिक्त स्वयं हजरत मसीह मौलवी अलीहस्तियाल भी इस पत्रिका के लिए निवन्ध दिया करते थे जो उर्दू में लिखे जाते थे फिर उनका अनुवाद अंग्रेजी पत्रिका मे प्रकाशित होता था। इन निबन्धों का पढने वालों पर गहरा प्रभाव पड़ता था और यही निवन्ध थे जिन्होंने रिल्यू की महानता पहले वर्ष ही स्थापित कर दी थी।

खुतबा-ए-इल्हामिया

इसी वर्ष ईदुज्जुहा के अवसर पर जो हज के दूसरे दिन होती है अल्लाह के इल्हाम के आदेश अनुसार आपने एक भाषण अरबी भाषा में निबन्ध किसी तैयारी के दिया। उस समय आप एक अजीब अवस्था में थे और आपका चेहरा नाल हो रहा था और चेहरे से नू (रोशनी) टपकता था और शान से भरपूर था और ऐसा मालूम होता था जैसे निद्रा अपस्था में हैं। ये निबन्ध ऐसा शानदार और इसकी भाषा ऐसी अद्वितीय है कि बड़े-बड़े अरबी विद्वान इसके जैसा नहीं लिख सकते हैं और इसके अन्दर ऐसी सच्चाई व्यक्त हुई है कि इतना की अकल हैरान हो जाती है। ये निवन्ध खुतबा-ए-इल्हामिया के नाम से प्रकाशित हो चुका है और पूरा अरबी भाषा में है।

अरबी भाषा के प्रचार के लिए

इसी युग में आपने अपनी जमात को अरबी सिखाने के लिए एक बहुत अच्छी योजना बनाई जो यह थी कि बहुत साफ और आसान भाषा में कुछ वाक्य बनाए जिन्हें लोग याद कर से और इस तरह उनको अरबी भाषा में महारत हासिल हो जाए और उन वाक्यों में यह सबूत रखी गई थी कि वह ऐसी बातों से सम्बन्धित होते थे जिनसे मनुष्य को प्रतिदिन काम पड़ता है और जिनमें ऐसे चीजें जो नाम और ऐसे शब्दों का प्रयोग किया जाता था जो मनुष्य प्रतिदिन बोलता है। इससे सम्बन्धित कुछ अभ्यास लिखे गए लेकिन यह में कुछ जल्दी काफी के कारण ये अभ्यास रह गया किन्तु फिर भी आप अपनी जमात के लिए एक मार्ग निकाल गए जिस पर चल कर सफलता हो सकती है। आपकी इच्छा थी कि हर एक देश की अपने भाषा के इलाज अरबी भाषा भी मुसलमानों की मादरी भाषा हो जाए और स्त्री पुरुष सब से
मीनारा-तुल-मसीह की नौव

इस वर्ष हज़रत मसीह मौजूद अलेहिससलाम ने कुछ भविष्य वाणियों के आधार पर कि मसीह दमशक्स* के पूर्व में एक सफेद मीनार पर उठाया। इसलिए आपने एक मीनार की नौव रखी ताकि वह भविष्यवाणी (पेशावरी) शाब्दिक अर्थों में भी पूरी हो जाए। इस भविष्यवाणी के असल अर्थ यह थे कि मसीह मौजूद खुले खुले तकरों के साथ आएगा और सारे संसार पर इसका प्रताप (जजाल) प्रकट होगा और उसको बहुत सफलता मिलेगी क्योंकि स्वयं विज्ञान अनुसार मीनार से अभिप्रय वह तर्क हैं जिनका व्यक्ति इनकार न कर सके और ऊँचाई पर होने का अर्थ ऐसी शान प्राप्त करने के हैं कि जो किसी की नज़र से छुपी न रहे और पूर्व की ओर से आने से अभिप्रय ऐसी उन्नत होती है जिसे कोई न रोक सके।

मुकद्दमा करमदीन (अज़ाला हैसियत उरफी)

1902 ई. के अन्त में हज़रत मसीह मौजूद अलेहिससलाम पर एक व्यक्ति करमदीन ने अज़ाला हैसियत उरफी का मुकद्दमा किया और जेहलम के स्थान पर

* सीरिया की राजधानी
अदालत में उपस्थित होने के लिए आपके नाम समन जारी हुआ। आप जनवरी 1903ई. में बहां चले गए यह यात्रा आपकी सफलता की ओर बढ़ने का प्रथम चिन्ह था कि आप एक पौजारी मुकदमा के लिए जा रहे थे लेकिन फिर भी भीड़ का यह हाल था कि इसका कोई अंदाजा नहीं हो सकता। जिस समय आप जेहलम के स्टेशन पर उतरे हैं वहां उस समय लोगों की इतनी भीड़ थी कि प्लेटफार्म पर खड़े होने की जगह नहीं थी बल्कि स्टेशन के बाहर भी रड़क रहे दोनों तरफ लोगों की इतनी भीड़ थी कि गाड़ी का गुजरना मुश्किल हो गया था। यहां तक कि जिला अधिकारियों को इसके लिए विरोध प्रवन्ध करना पड़ा और गुलाम हैदर साहिब तहसीलदार इस विरोध ड्यूटी पर लगाए गए आप हजारत साहिब के साथ बहुत मुश्किल से रास्ता बनाते हुए गाड़ी को ले गए क्योंकि शहर तक लोगों की भीड़ के कारण रास्ता न मिलता था। शहर के निवासियों के अतिरिक्त गाँवों से भी हजारों व्यक्ति आपके दर्शन के लिए आए थे। लगभग एक हजार लाख लोगों ने इस स्थान पर बैठक की और जब आप अदालत में उपस्थित होने के लिए गए तो इतना ज्यादा लोग मुकदमा की कार्रवाई सुनने के लिए उपस्थित थे कि अदालत को प्रबंध करना मुश्किल हो गया। दूर तक लोग फैले हुए थे। पहली ही पेशी में आपको बरी कर दिया गया और आप ठीक-ठाक वापिस आ गए।

जमाजत की उन्नति और करमदीन वाले मुकदमे का लम्बा होना

1903 से आप की उन्नति आश्चर्यजनक तरीके से आरम्भ हो गई और कई बार एक दिन में पांच पांच सी व्यक्ति बैठक के पत्र लिखते थे और आप के मानने वाले अपनी मित्राँ में हजारों लाखों तक पहुँच गए-- हर प्रकार के लोगों ने आप के हाथ पर बैठक की और यह सिसिलिया बड़े जोर से फैलना आरम्भ हो गया और फिर दूसरे राज्यों में भी फैलना आरम्भ हो गया इसी साल जमाजत आहमदिया के लिए एक दुःखदायी दुर्घटना सामने आई कि कानून में इस जमाजत के एक नेक सदस्य को धार्मिक विरोध अपराध के कारण संगमर्मात्मक किया गया (पत्रों से माना गया।)

मुकदमे का सिसिलिया जो जेहलम में आरम्भ होकर पूरी तरह से खत्म हो गया था फिर बहुत जोर से आरम्भ हो गया अर्थात करमदीन जिसने पहले वहां आप के
बिरुद्ध मुकदमा किया था उसी ने फिर गुरुदासपुर में आया था अजलाम हैसियत उर्फी का दावा कर दिया इस मुकदमे को इतना लम्बा कर दिया जिसे देख कर आशर्च्छ होता है। इस मुकदमे की कार्यवाही के दौरान एक मैजिस्ट्रेट भी बदल गया और इस की त्रस्ता ऐसे थें अन्तर से रखी गई कि आखिर मजबूर हो कर आपको गुरुदासपुर में ही रहना पड़ा इस मुकदमा की बहुत अधिक लम्बा कर दिया गया था सिर्फ तीन चार शब्दों पर बातचीत करनी थी करमदीन ने आपके बिरुद्ध एक सफेद झूठ बोला था आप ने उसके लिए अपनी पुस्तक में कज़ज़ाक का शब्द लिखा था जिसका अर्थ अर्थव भाषा में हूटा भी है और बहुत हूटा भी इसी तरह एक शब्द तर्जमा भी है जिसका अर्थ कमीने (दुख्द) के हैं। लेकिन कभी कल्दुजजिना (हरमी ओलाद) के अर्थों में भी प्रयोग हो जाता है। और इसका जोर इस बात पर था कि मुझे बहुत हूटा और कल्दुजजिना कहा गया है। हालांकि अगर साबित है तो यह फिर मैंने एक झूठ बोला था इस पर न्यायालय में इन शब्दों की जांच पड़ताल आयम हुई और कई इस प्रकार के और बालिक प्रस्तुत पैदा हो गए जिन पर ऐसी पाबंदी संभव छिड़ी कि दो वर्ष इन मुकदमों में लग गए। मुकदमों के बीच में एक मैजिस्ट्रेट के बारे में घोषित हुआ कि इसके साधनामयों के कहा है कि मिर्जा साहिब इस समय खूब परंतु हुए हैं। इनको सजा अवधि दो चाहे एक दिन की केवल क्यों न हों जिन मिर्जों ने यह बात सुनी तो बहुत घबराए हुए आपके पास आए और बहुत दर कर बोले कि हजरत हम ने ऐसा सुना है आप इस समय लेते हुए थे यह बात सुनने ही आप का चेहरा लाल हो गया और आप एक हाथ के सहारे से उठ कर बैठे और उठ कर बहुत जोर से फरारिया कि क्या वह खुदा तआला के शेर पर हाथ ढ़लना चाहता है। अगर उसने ऐसा किया तो वह देख लेना कि इसका क्या परिणाम होगा न मालूम यह सूचना सच्ची है या झूठी लेकिन इस मैजिस्ट्रेट को इन्हीं दिनों वहाँ से बदल दिया गया और प्रयत्नों के बावजूद फौजदारी अधिकार उससे ले लिए गए और कुछ समय के बाद उसका दर्जा भी कम कर दिया गया इसके बाद मुकदमा एक और मैजिस्ट्रेट के समान आया उसने भी ना मालूम क्यों इसका बहुत लम्बा किया और डिसिपल मैजिस्ट्रेट वकील के न्यायालय में तो आपको कुर्सी मिलती थी लेकिन इस मैजिस्ट्रेट का बावजूद आप के बहुत बीमार होने के आपको कुर्सी न दी और कई बार व्यास की हालत में पानी पीने तक की आज्ञा न दी। आखिर एक लम्बे मुकदमे के बाद आप पर दो सौ सूबै मुराने किया
इस पर सैनिक जज साहिब अमृतसर सर मिस्टर हरी साहिब के न्यायालय में जो एक युरोपियन थे इस फैसला की देखभाल की गई और जब उन्होंने मुकदमे की मिसाल देखी तो बहुत अफसोस किया कि ऐसे कौर सुखद मोहन जी को मैजिस्ट्रेट ने इतना लम्बा क्यों किया और कहा कि अगर यह मुकदमा मेरे पास आता तो मैं एक दिन में इतने समाप्त कर देता करमदीन जैसे मनुष्य को जो शादी मिली साहिब ने प्रयोग किए अगर उन से बढ़ कर भी कहे जाते तो बिलकुल सही होते जो कुछ हुआ बहुत ही अनुचित हुआ और दो घटना के भीतर आपको सी रंग दिया और जुमाना मुआफ कर दिया और इस तरह दूसरी बार एक युरोपियन शासक ने अपने कार्य से साधित कर दिया कि खुदा तालमेल शासन उसी लोगों के हाथों में देता है। जिनको वह इस योग्य समझता है।

इस मुकदमे का फैसला जनवरी 1905 में हुआ और इस फैसला के साथ खुदा तालमेल ने जो वही (इल्हाम का आदेश जो पैगाम्बर पर उसकी) आप पर कई साल पहले मुकदमे के परिणाम के बारे में की थी वह पूरी हुई।

इस मुकदमे की कार्यवाही को एक जगह ब्यान करने के लिए मैं आपके दो जरूरी सफर छोड़ गया हूँ जिनमें से आपका पहला सफर तो लाहौर की ओर या जो मुकदमे के बीच में अगस्त के महीने में 1904 में हुआ इस बार आप लाहौर में पन्नह दिन रहे इस यात्रा में भी लोग आए से मिलने के लिए बहुत चाह से आए और स्टेशन पर तिल धरने को स्थान न था और सारा समय एक शोर पड़ा रहा आपके रहने के स्थान के नीचे जुबाह से शाम तक बराबर एक भीड़ रहती विरोधी आ आ कर गालियाँ देते और शोर मचाते यहाँ तक कि कई विरोधी ने औरतों के रहने की जगह में घुसने का प्रयत्न किया जिन्हें जबरदस्ती बाहर निकाला गया लाहौर के मिस्टर की प्रार्थना पर आप का लैक्चर (भाषण) निर्दिष्ट हुआ जो छापा गया और एक बड़े हाल में वह मौलवी अनुभव करीम साहिब महमूद ने पढ़ कर सुनाया आप अलैहिसलाम भी निकट ही बैठे थे लगभग सात आठ बजे व्यक्ति थे इस लैक्चर के समाप्त होने पर व्यक्तियों ने प्रार्थना की कि आप कुछ जवाबी भी बयान फर्माएं इस पर आप उसी समय खड़े हो गए और आपने घटना तक एक छोटी सी तकरीर फर्माई। चूँकि यह एक अनुभव वाली बात थी कि आप जहाँ जाते हर धर्म तथा कोई के लोग आपके विरुद्ध जोड़ा दिखलाते विरोध: मुसलमान कहलाने वाले। इसलिए पुलिस के आफसरों ने इस बार बहुत अच्छा प्रबंध किया हुआ था देसी पुलिस के अंतिरिक्त युरोपियन
सिपाही भी प्रबन्ध के लिए लगाए गए थे जो लहरों हाथ में लिए थोड़ी थोड़ी दूरी से खड़े हुए थे चूँकि पुलिस अफसरों को पता चल गया था कि कई असभ्य व्यक्ति जलसा गाह से बाहर झगड़े के लिए तैयार हैं इसलिए उन्होंने आप की वापसी के लिए अच्छा प्रबन्ध कर रहा था और कई सवार कुछ दूरी पर आगे आगे चले जाते और पीछे आपकी गाड़ी थी गाड़ी के पीछे पिर कुछ पुलिस के युवक थे और इन के पीछे चलने वाले पुलिस के आदमी। इस तरह बड़ी सुरक्षा से आपकी घर पहुँचाया गया और चालवालों का अपनी सैनिकी में सफलता प्राप्त न हो सकी वहाँ से आप वापस गुरुदासपुर आ गए और अन्त में 1904 में आप गुरुदासपुर के मुक्तहार से किसी तरह पुरस्कार प्राप्त किया। गुरुदासपुर गए और अक्टूबर 27 अक्टूबर को स्टालकोट गए क्योंकि वहाँ के मिस्रों ने आग्रह कर के वहाँ तक जाने की प्रार्थना की थी और कहा था कि आप अपनी आरंभिक आयु में कई वर्ष यहाँ रहे और अब भी जबकि दुःखा तालाब ने आपको बहुत बड़ी शान से सफलता दी है। एक बार इस तरह कदम रख कर इस कभी का बकरता दें यहाँ की यात्रा भी आपकी सफलता का स्पष्ट सबूत था क्योंकि हर एक स्टेशन पर आप से मिलने के लिए बहुत अधिक जंता आई थी कि स्टेशन के अधिकारियों को प्रबन्ध करना मुश्किल हो जाता था और लहार के स्टेशन पर तो उन्नी भीड़ हुई कि प्लेटफार्म टिकट समाप्त हो गए और स्टेशन मास्टर को चिन्ह टिकट ही लोगों को भीतर आने की आज्ञा देनी पड़ी जब आप स्टालकोट पहुँचे तो स्टेशन से आप के रहने का स्थान जो मिल भर की दूरी पर था बराबर व्यक्तियों की भीड़ था शाम के समय गाड़ी स्टेशन पर पहुँची यात्रियों के गाड़ी में चढ़ने चढ़ने से देख लगा गई और आप की गाड़ी अभी थोड़ी ही दूर चलने पाइ थी कि अन्धेरा हो गया लोगों की मौड़ की बजह से और रात हो जाने से यह झक हुआ कि कई बहुत व्यक्ति गाड़ी के नीचे न आ जाएं इसलिए पुलिस को इस बार का खास प्रबन्ध करना पड़ा कि आप के आगे आगे रास्ता साफ़ रहे स्टालकोट के एक बहुत अभी और ईमानदार आनेरी मैकिस्ट्रेट पुलिस के साथ इस कार्य पर थे उनको बड़ी मुश्किल और सफाई से रास्ता साफ़ करना पड़ता था और गाड़ी बहुत ही धीरे-धीरे चल सकती थी। गाड़ी की बिंदुकियाँ क्लो दी गई थी वाज़ा और गलियों में व्यक्ति दोनों और खड़े होने के अतिरिक्त दुकानों के ब्रांडेड भी भरे हुए थे और कई स्थान न मिलने की बजह से बिंदुकियों के छाँजों पर चढ़े बैठे थे सारी छटों पर हिन्दुओं और मुसलमानों
लैक्चर स्यालकोट

स्यालकोट में आप पाँच दिन रहे और तबलीग (प्रचार) के अनिवार्य कि आप घर पर मिलने वालों को करते रहते थे और आप का एक पतंजलि लैक्चर भी यहाँ हुआ जिस समय लैक्चर की घोषणा हुई। उसी समय स्यालकोट के उलामा ने बड़े जोर से घोषणा की कि कोई व्यक्ति मिर्जा साहिब का लैक्चर (भाषण) सुनने न जाए और यह भी फतवा कि जो व्यक्ति आप का भाषण सुनने जाए उस का निकाह दूर जाएगा। (यह एक जबरदस्त हथियार उस समय से हिंदु के उलामा के पास जिससे वह अनपढे मुसलमानों पर अपना शासन कायम रखते हैं।) और जिसके लिए झूठी सच्ची कोई भी दलील उनके पास नहीं है। और इस घोषणा को ही बहुत न समझा गया बल्कि जिस मकान में आप का भाषण था उसके मुकाबले कुछ विरोधी मौलिकियों ने अपने भाषण को दी ताकि व्यक्ति आपके भाषणों में इकड़े न नहीं पाएं और बाहर के बाहर ही रह जाएं। इसके अनिवार्य कुछ व्यक्ति लैक्चर स्थान के दरबार पर भी नियुक्त कर दिया ताकि अन्दर जाने वालों को रोकें और बताएं कि आपके भाषण में जाना गुनाह है। और कुछ तो इतने आगे बढ़ गए थे कि आपने वालों को पकड़-पकड़ कर दूसरी ओर ले जाते थे मगर इसके बावजूद भी लोग बहुत अधिक आए और जिस समय लोगों ने सुना कि आप लैक्चर देने में गए हैं।

तो विरोधी उलामा (मौलिक) का भाषण छोड़कर वहाँ भाषण आए और बहुत अधिक चाव के लोगों ने भाषण में लिया कि सरकारी कर्मचारी झूठी के दिन न होने पर भी भाषण में इकड़े हुए यह भाषण भी छपा हुआ है। और मौलिक अद्वृत करिम साहिब रजी अल्लाह अल्लाह ने फ़द़ कर सुनाया था भाषण के बीच में कुछ व्यक्तियों ने शोर मचाना चाहा पुलिस अफ़सर में जो एक युरोपियन साहिब थे बहुत होशियारी से उनके रोका और एक बहुत अच्छी बात फर्मा थे कि तुम मुसलमानों को इनके भाषण पर घबराने की क्या वजह है। तुम्हारा तो यह समर्थन करते हैं। और तुम्हारे रसूल की महानता कायम करते हैं। नाराज होने का अधिकार तो हमारा था कि जिनके खुदा (मसीह) की मृत्यु
साबित करने पर यह इतना अधिक जोर देते हैं। इस तरह पुलिस के अफसरों की होशियारी की वजह से कोई लड़का झगड़ा न हुआ इस भाषण में एक विशेषता यह थी कि आपने पहली बार अपने आपको हिंदुओं के सामने पन्नीय क्रुण्ण के रूप में पेश किया जब भाषण समाप्त करने पर कोई आपने लगे तो कुछ व्यक्तियों ने पत्थर मारने का इरादा किया लेकिन पुलिस ने इस झगड़े को भी रोका।

भाषण के बाद दुसरे दिन आप वापस आए और इस अवसर पर भी पुलिस के प्रवक्ता की वजह से कोई शरारत न हो सकी जब लोगों ने देखा कि हमें दुसरे देने का कोई अवसर न मिला तो कुछ लोग शहर से कुछ दूर बाहर जा कर रेल की सड़क के पास बैठे हो गए और चलती हुई ट्रेन पर पत्थर फेंके लेकिन इसका परिणाम सिवाए कुछ शीशों टूट जाने के और क्या हो सकता था।

मौलवी अबुदुल करीम साहिब रजी अल्लाह अन्हों की मृत्यु और देहली की यात्रा के हालात

11 अकटूबर 1905 को आप अलेहिस्लाम के एक सदभावक अनुयायी मौलवी अबुदुल करीम साहिब रजी अल्लाह अन्हों जो विभिन्न अवसरों पर आप के भाषण सुनाया करते थे की मृत्यु एक लम्बी बीमारी के बाद हुई। और आपने कादियान में एक अस्पताल पहुँचे जहाँ इसलिए उन्हें इस्तेमाल थर्म से परिचित विद्युत भॉला किया जाता था। तभी वहाँ स्थान खाते हुए ने रहे। मौलवी अबुदुल करीम साहिब रजी अल्लाह अन्हुम की मृत्यु के कुछ दिन बाद आप देहली चले गए और उनके साथ अलग हो गए उस समय देहली पन्नद्र जाने पहले के देहली न थी जिसने दीवार बार शोर मचाया था। लेकिन वहाँ भी आपके जाने पर खूब शोर होता रहा इस पन्नद्र दिन के अद्वितीय दिन देहली में कोई पन्निक भाषण न दिया लेकिन घर पर लगभग प्रतिदिन भाषण होते रहे जिस में रेल की तंगी की वजह से दो अधार होते सो अधिक व्यक्ति एक समय में इकड़े हो सकते थे। एक दिन लोगों ने शोर भी किया और एक दिन आक्रमन करके घर पर चढ़ जाने का भी इरादा किया लेकिन वह भी पहली यात्रा के मुकाबले भूल अन्दर था।

इस योजना से वापसी पर लुधियाना की जमायत ने दो दिन के लिए आपको लुधियाना में ठहराया और आपको एक पन्नीक भाषण बहुत ही अच्छी तरह से हुआ।
वहाँ अमृतसर की जमात का एक दल पहुँचा कि आप एक दो दिन अमृतसर भी ढूँढ़ें जिसे हजरत अलीहस्सलाम ने मनूष्य फर्मिया और लुधियाना से वापसी पर अमृतसर में उतर गए वहाँ भी आपके एक आम भाषण का मुझाव दिया गया। अमृतसर भिक्षु सिलसिला अहमदिया के विशेषज्ञों से भरा था और मीलवियों का यहाँ बहुत जोर था। उनके भड़काने पर लोग शोर करते रहे जिस दिन आपने भाषण था उस दिन विशेषज्ञों ने निर्णय कर लिया कि जिस तरह हो भाषण न होने दे। आप भाषण हाल में चले गए तो देखा कि दरबार लांब बड़े-बड़े चोरों पहने हुए लांबे-लांबे हाथ मार कर आपके बिरुद्ध बोल रहे थे। और बहुत से लोगों ने अपनी झोलियों में पत्थर भरे हुए थे आप भाषण स्थल में अन्दर चले गए और भाषण आरम्भ किया। मीलवियों को आत्मोपनाश का कोई अक्षर न मिला जिस पर लोगों को भड़काएं फ्यूड मिन्ट आपके भाषण को हो चुके थे कि एक व्यक्ति ने आपके आगे चाय की प्याली रखी कैसे आपके गले में दर्द था और ऐसे समय में धोने-धोने समय पस्चात् कोई तरल पदार्थ प्रयोग किया जाए तो आराम रहता है। आपने हाथ से इशारा किया कि रहने दो तथा उसने आप अलीहस्सलाम की तकलीफ को समझ कर प्याली आगे कर ही दी। इस पर आपने भी उसमें से एक धूंध लिया लेकिन वह रमजान का महीना था। मीलवियों ने शोर मचा दिया कि यह व्यक्ति रमजान शरीफ में रोजें नहीं रखता आपने उत्तर दिया कि कुराॅम शरीफ में अलाउद्दाला फर्मिया है कि बीमार या यात्री रोजा (ब्रत) न रखे बल्कि जब आराम आ जाए या यात्रा से वापस आ जाए तो रोजा (ब्रत) रखे और में तो बीमार भी हूँ और यात्री भी लेकिन जोश में भे हुए लोग कब रखते हैं। शोर बढ़ता गया और पुलिस के प्रयत्नों के बावजूद शान्त न हो सका। आखिर आप बैठ गए और एक व्यक्ति को नजम (कविता) पढ़ने के लिए बहादुर कर दिया गया उसके कविता पढ़ने पर लोग चुप हो गए। तब फिर आप खड़े हुए और मीलवियों ने शोर मचा दिया और जब आप ने भाषण जारी रखा तो लड़के के लिए तैयार हो गए और स्टेज पर आक्रमण करने के लिए आगे बढ़े पुलिस ने रोकने का प्रयत्न किया परन्तु हजारों व्यक्तियों की लहर उनसे रुकती न थी और ऐसा लगता था कि समुद्र की एक लहर है जो आगे ही बढ़ती चली आती है। जब पुलिस से उनका संभालना कठिन हो गया तब आपने भाषण छोड़ दिया लेकिन महीने भी लोगों का जोश ठंडा न हुआ और उन्होंने स्टेज पर चढ़कर
आक्रमण करने का प्रयत्न किया इस पर पुलिस इंस्पेक्टर ने आपसे कहा कि आप अन्दर के कमरे में चले जाएं और जल्दी सिपाही दौड़ाएं कि बन्द गाड़ी ते आएं पुलिस लोगों को इस कमरे में आने से रोकती रही और दूसरे दरवाजे के सामने गाड़ी लाकर खड़ी कर दी गई आप उसमें बैठने के लिए चल पड़े। लोगों को पता चल गया कि आप गाड़ी में बैठ कर जाने लगे हैं। इस पर जो लोग भाषण हाल से बाहर खड़े थे वह आक्रमण करने के लिए आगे बढ़े और एक व्यक्ति ने बहुत जोर से एक मोटा सोटा आपको मारा आफका एक मानने वाला पास ही खड़ा था जल्दी ही आप को बचाने के लिए आपके और आक्रमण करने वाले के बीच में आ गया क्योंकि गाड़ी का दरवाजा खुला था। सोटा उस पर रुक गया और उस व्यक्ति के बहुत कम चोट आई बरना उस व्यक्ति का खून हो जाता। आपके गाड़ी में बैठने पर गाड़ी चली लेकिन लोगों ने पत्थरों की बारिश आरंभ कर दी गाड़ी की खिड़कियाँ बन्द थी उन पर पत्थर पड़ते थे तो वह खुल जाती थी। हम उन्हें पकड़ कर सम्बालते थे लेकिन पत्थरों की बौछार के कारण वह हाथों से छूट-छूट कर गिर जाती थी लेकिन अल्लाह ताआला के फजल से किसी को चोट नहीं आई सिर्फ एक पत्थर खिड़की में से गुजरता हुआ मेरे छोटे भाई के हाथ पर लगा क्योंकि पुलिस गाड़ी के चारों तरफ़ खड़ी थी बहुत से पत्थर उन्हें लगे जिस पर पुलिस ने लोगों को वहाँ से हटाया और गाड़ी के आगे पीछे बल्कि उसके खुल पर भी पुलिस के आदमी बैठ गए और गाड़ी को घर तक पहुंचाया। लोगों में इतना अंधकार जोश था कि पुलिस की हजारी के बावजूद वह दूर तक गाड़ी के पीछे भागे। दूसरे दिन आप कादियान का वापस आ गए।

मृत्यु की भविष्यवाणी तथा सिलसिला की प्रणाली सदर
अन्जुमन की नियुक्ति

दिसम्बर 1905 ई. में आपको इलाहाबाद (आकाशवाणी) हुआ कि आप की मृत्यु
निकट है। जिस पर आपने एक पत्रिका “अलवसिंबयल” लिख कर अपनी सारी
जमात में छपवाया और उसमें जमात को समाचार दिया कि मेरी मृत्यु निकट है
और उनको तस्ली दी और खुदाई इलाहाबाद के अनुसार एक मकबरा बनाने की घोषणा
की और उसमें दफन होने वालों के लिए यह शर्त निर्दिष्ट की कि वह अपनी सारी
सम्पत्ति का दसवां भाग इस्लाम को फैलाने के लिए दे और लिखा कि मुझे अल्लाह
तालाला ने खुशखबरी दी है कि इस मकबरे में केवल वही दफन हो सकेगे जो स्वर्गीय होंगे और उस धन की रक्षा के लिए जो इस मकबरा में दफन होने के लिए लोग इस्लाम के प्रचार के लिए देंगे एक अनुज्ञन कायम की। इस प्रसंवत के अतिरिक्त यह भी बहिष्कारणी की फिर जमात की रक्षा और उसकी सम्भालने के लिए खुदा तालाला स्वयं मेरी मृत्यु के परशुरात उसी प्रकार प्रभाव करेगा जिस प्रकार पहले नवायों के बाद करता रहा है और ऐसे लोगों को खड़ा करता रहेगा जो जमात की देखभाल उसी प्रकार करेगे जिस तरह हजरत मुहम्मद नस्लतफ़ा सल्ल्लाहु अल्लाह के परशुरात हजरत अबू बकर रजी अल्लाह अनहों ने की थी। सिलसिला की शैक्षणिक और प्रचार-प्रवर्तक कार्यों के लिए अत वसीयत के प्रकाशन तक मदरसा और मैज़िज़ीन की प्रवन-प्रकृत समूहों द्वारा और मकबरा के लिए एक नवीन संस्था आयोजित की गई परतु खुदाम की प्रार्थना पर दिसम्बर 1906 ई. में आपने इस अनुज्ञन की जाए जिसे वस्था तथा भील के माल की सुशक्षा के लिए नियुक्त किया गया था एक ऐसी अनुज्ञन नियुक्त कर दी जिसके अधीन दीनी और सांसारिक शिक्षा के मदरसे, रिस्यू ऑफ़ रिलिजन, मकबरा बहिशरती आदि सब कार्य अलग-अलग कर दिए गए और विभिन्न अनुज्ञन की जाए एक ही सदर अनुज्ञन की नियुक्ति कर दी।

1907 ई. में सितम्बर के महीने में आप का लड़का मुनाफ अहमद इस बहिष्कारणी के अनुसार जो उनके जन्म के समय ही प्रकाशित कर दी गई थी। साधे आठ साल की आयु में उनकी मृत्यु हो गई।

इसी वर्ष सदर अनुज्ञन की विभिन्न शहरों में शाखें नियुक्त करने की सलाह दी गई। अमरीकन दो आदमी और एक अौर आपसे मिलने के लिए आए जिनसे देर तक बातचीत हुई और उन्हें मसीह के दोबारा अवतारित होने की वातावरणा समझाई। इसी वर्ष पंजाब में कुछ बिरोधी उत्पन्न हो गया इस पर आपने अपनी जमात को सक्रिय का हर प्रकार से वफाअादर रहने के लिए कहा और विभिन्न भागों पर आपकी जमात ने इस शोर को दूर करने में बिना किसी लालच के सेवा की।

दिसम्बर में आयोग ने लाईरे में एक धार्मिक अभिव्यक्त मनाया और प्रत्येक धर्मों के लोगों को इसमें सम्मिलित होने के लिए कहा। अंततः शरीर रक्षा के लिए विहारी धर्म के अनुयायी दो पूर्व धर्म पर आक्रमण करने की आज्ञा न देने तथा स्वयं भी इस रोक को स्वीकार किया। आप अल्ल्हुस्लाम से भी इसमें सम्मिलित
होने के प्रारंभ की गई तो आपने उसी समय कह दिया कि मुझे इस सुझाव में भोजन की बदौलत आती है। लेकिन फिर भी हजूरज़ (दरवाज़ा) पूरी करने के लिए एक निकट लिख कर उसमें पढ़ने के लिए भेज दिया। इस बिन्ध में आपने आराध्यों को बढ़े जोर के साथ समझौता का न्यूता दिया। और बड़े नाते से सिर्फ इस्लाम की विशेषता हमके सामने रखी। हमारी जमात के लगभग पाँच सौ व्यक्ति टिकट खरीद कर इस अधिवेशन में सम्मलित होते रहे और हमारे कारण दूरे मुस्लिमां मे शामिल होते रहे लेकिन जब आराध्य की बारी आई तो उन्होंने हमारे नयी केसर सल्लतलाहो अलैहि वसलम को गालियाँ दी और बुरे से बुरे शब्द हजूर के प्रति प्रयोग किए फर्न्तु हम आप अलैहिसलाम की शिक्षा के अधीन उन भाषणों को सुनते रहे और विस्तीर्ण ने उठकर इतना भी नहीं कहा कि हमारे साध भोजन किया गया। वचन भंग किया गया है।

31 मार्च 1908 ई. में सर चिल्लान साहिब बहादूर फनानाशाह कमिस्नर सूता पंजाब कार्यालय में आए क्योंकि यह फहला मौका था कि पंजाब का एक ऐसा आदर्शी और उच्च अधिकारी कार्यालय आए। आप अलैहिसलाम मे फूरी जमात को इसके स्वागत का आदेश दिया और अपने सकौल के मैदान में उनका देश लगाया। और उनकी दावत भी की क्योंकि आपके संबंध में आपके विरोधियों ने यह प्रसिद्ध कर दिया था कि आप पीठ पीछे सरकार के विरोधी हैं क्योंकि उच्च अधिकारियों से गालियाँ और परिवार के सम्बन्ध के बाद नहीं मिलते थे। आपने इस इतिहास को दूर कर दिया और फनानाशाह कमिस्नर सहिब से मुलाकात के लिए टिकट चुके गए। उस समय आपके साथ सात आता आल्टे आपकी जमात के भी थे।

आदर के साथ आपने देरे के दरवाज़े पर हजरत मसीह मौजूद अलैहिसलाम का स्वागत किया। और आपसे विभिन्न मामलों में आपके सिठसिता के संबंध में पूछते रहते फर्न्तु इस सारी बातलाप में एक बात विशेष रूप से वर्णन पूर्ण है। उन दिनों अमित्तम लीला नई नई नथापित हुई थी और अंग्रेज़ पदाधिकारी इसके संबंध में प्रसंग थे कि उनके व्याल में कांग्रेस की कमियों को दूर करने के लिए यह एक जबरदस्त आता प्रमाणित होती। और कुछ अधिकारी धनवानों को इसमें सममित होने का सुझाव भी देते थे। फनानाशाह कमिस्नर ने भी आपसे अमित्तम लीला का वर्णन किया और इसके बारे में आपकी राय जाननी चाही। आपने फर्मा कि मैं इसे पसंद
नहीं करता। फानासाल कमिश्नर ने इसकी विशेषता को मान लिया। आपने कहा कि यह रास्ता खतरनाक है। उन्होंने कहा आप इस कॉन्ग्रेस का विचार न समझें। इसकी नियुक्ति तो ऐसे रंग में हुई थी कि इसका अपनी मांग में बढ़ जाना आरम्भ से नजर आ रहा था। लेकिन मुस्लिम लीग की नीति ऐसे लोगों के हाथों और ऐसे कानूनों की मदद से पड़ी है कि यह कभी कॉन्ग्रेस का रंग पकड़ ही नहीं सकती। इस पर आपके अनुयायी ख्वाजा कमालुद्दीन ने जो वोंकिंग मिशन के संस्थापक और पत्रिका मुस्लिम इन्दिया के मालिक थे सर बिल्सन का समर्थन किया और कहा कि मैं भी इसका सदस्य हूं। इसके ऐसे नियम बनाए गए हैं कि इसके गुप्त्रांग होने का भय नहीं। परंतु दोनों के उत्तर में हजरत मसीह मौलुद ने फर्माया कि मुझे तो इससे बदबू आती है कि एक दिन यह भी कॉन्ग्रेस का रंग नहीं ले सकती। मैं इस प्रकार राजनीति में हस्तक्षेप करता खतरनाक समझता हूं। यह चर्चा तो इस पर समाप्त हुई परंतु प्रत्येक राजनीतिक घटनाओं का अध्ययन करने वाला जानता है कि आपका विचार किस प्रकार अक्षर-अक्षर पूरा हुआ।

इसी वर्ष 26 अप्रैल को अपनी माता जी की बीमारी के कारण आपको लाहौर जाना पड़ा। जिस दिन कादियान से चलना था उसी रात आपको इल्हाम हुआ।

अर्थात् सांसारिक घटनाओं से निकट मत हो। इस पर आप ने फर्माया आज यह इल्हाम हुआ है कि जो किसी भयानक घटना की ओर संकेत करता है। संयोग बसा उसी रात मे पकड़ी भाई मिर्जा शरीफ अहमद बीमार हो गए। परंतु जिस प्रकार से हो सका चल पड़े। जब बटाला पहुँचे जो कादियान का रंग था तो वहाँ पता लगा कि सरहद गढ़बड़ के कारण गाड़ीयाँ काफी नहीं इसी लिए ग्राह रिजर्व न हो सकी। वहाँ दो दिन दिन प्रतीक्षा करती पड़ी। आपने अपने घर में फर्माया कि इस देर बालर वाला इल्हाम (अकायतानी) हुआ है उभर अल्लाह तात और से रोके पड़ रहीं हैं। अच्छा है कि यहीं चतुर में ही कुछ पत्र के लिए ठहर जाएं। वातावरण बदल जायेगा। इलाज के लिए कोई इंदी कांड कह नहीं चली ली जाएगी। तब इन्होंने बिन्द की कि नहीं लाहौर ही चलो आखिर दो दिन दिन के बाद आप लाहौर आ गए। आप के पहुँचते ही लाहौर में एक शोर मच गया और मौलवी आपके विरुद्ध इतने हो गए। जिस मकान में आप उतरे थे उसके पास ही एक मैदान में आपके विरुद्ध लैंडशेड...
लाहौर के अमीर लोगों का स्वागत तथा हज़ीर
अलैहिस्सलाम का भाषण

हिंदुस्तान के धनी लोग बल्कि यह कहना चाहिए कि सारी दुनिया के धनी लोग धम्म से बेखबर होते हैं। इस लिए आप ने उनको कुछ सुनाने के लिए यह सुझाव दिया कि लाहौर के एक गैर-अहमदी ने जो आपका अदालत था धर्मियों को न्यौता दिया। और खाने के समय कुछ भाषण दिया। भाषण अधिक लम्बा हो गया। जब लगभग एक घंटे का समय गुजर गया तो एक व्यक्ति ने घबराहट का प्रकटन किया तो इस पर बहुत से लोग बोल उठे कि खाना तो हम प्रतिदिन खाते हैं परन्तु यह खाना (गिजा-ए-रूह) तो आज मिलता है आप भाषण जारी रखें। दो अदालत घंटे तक आपका भाषण होता रहा। उस भाषण के कारण लोगों में यह खयाल पैदा हो गया कि आपने अपना नबुव्वत का दाया वापिस ले लिया। लाहौर के उर्फूू दैनिक अखबार-ए-आम ने यह खबर प्रकाशित कर दी। इस पर आपने उसी समय इसका खण्डन किया और लिखा कि मेरा नबुव्वत का दाया है और मैंने इसे कंबी वापिस नहीं लिया हूं केवल इस बात से इन्कार है कि हम कोई नयी शारीर लाये हैं। शारीर बहुत है जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लाए थे।

हज़ीर अलैहिस्सलाम का निधन

आपको हमेशा पेट की ख़ाराबी की शिकायत रहती थी। लाहौर आने पर यह बीमारी ज्मादा बढ़ गई तथा भीले वालों की हर समय भीड़ लगी रहती थी इसलिए
आपको आराम भी न मिला। आप उसी अवस्था में थे कि आपको इलाहम हुआ।

अर्थात प्रस्थान करने का समय आ गया फिर प्रस्थान करने का समय आ गया। इस इलाहम पर लोगों को परेशानी हुई। परंतु उसी समय कादियान से एक बहुत ही प्यारे मित्र की मृत्यु की सूचना मिली और लोगों ने यह इलाहम उससे सम्बन्धित समझा और उनके दिल को तसल्ली हो गई। लेकिन आप अलीहिस्सलाम से जब पूछा गया तो आपने कहा कि यह सिलसिला के एक बहुत बड़े व्यक्ति के लिए है वह व्यक्ति नहीं। इस इलाहम से माता जी ने घबरा कर एक दिन कहा कि चलो वापिस कादियान चलें। आपने उत्तर दिया कि अब वापिस जाना हमारे बस में नहीं। अब अगर खुदा ही ले जाएगा तो हम जा सकेंगे। परंतु इस इलाहम और बीमारी के इलावा आप अपने काम में लगे रहे और इस रोग ही में हिन्दुओं और मुसलमानों में सभी व मित्रता कराने के लिए आपने एक लेखक देने का सुझाव दिया और लेखक लिखना आरम्भ कर दिया और उसका नाम "फैमेम सुलह" (मैत्री संदेश) रखा। इससे आपकी हालत और भी कमजोर हो गई। और बीमारी बढ़ गई। जिस दिन लेखक समाप्त होना था उस रात इलाहम हुआ।

अर्थात न रहने वाली आयु पर भरोसा न करना। आपने उसी समय यह इलाहम घर में गुरुं दिया और फर्माया कि यह हमारे सम्बन्ध में है। दिन को लेखक खत्म हुआ और छपने के लिए दे दिया गया। रात के समय आपको एक दस्त आया और बहुत कमजोरी हो गई। माता जी को जगाया। वह उठीं तो आपकी हालत बहुत कमजोर थी। उन्होंने घबरा कर पूछा कि आपकी क्या हो गई है? कहा वहीं जो में कहा करता था (अर्थात मृत्यु रोग) इसके पश्चात्, फिर एक और दस्त आया। इससे बहुत ही कमजोरी हो गई। फर्माया मौलवी नुरहीन साहिब को बुलाओ (मौलवी साहिब जैसा कि उपर लिखा गया है बहुत बड़े हकीम थे।) फिर फर्माया कि महमूद (लेखक पत्रिका) और मीर साहिब (आप अलीहिस्सलाम के सत्र) को जगाओ। मेरी चारपाई आपकी चारपाई से थोड़ी ही दूर थी। मुझे जगाया गया उठकर देखा तो आपको बहुत तकलीफ थी। डॉक्टर भी आ गए थे। उन्होंने इलाज शुरू किया परंतु आराम न मिला। आखिर ठीक के द्वारा कुछ दवाईयाँ दी गई। इसके पश्चात् आप अलीहिस्सलाम सो
गया। जब सूर्य का समय हुआ आप उठे और उठकर नमाज़ पढ़ी। गला पूरी तरह से बैठ गया था कुछ कहना चाहा परन्तु बोल न सके। इस पर कलम दबात मोगा परन्तु लिख भी न सके। कलम हाथ से छूट गई। इसके बाद लेट गए और ढोंढ़ी देर तक नींद की सी हालत रही। और लगभग सात दस बजे दिन की आप उस पाक खुदा से जा मिले। जिसके दीन की सेवा के लिए आपने अपनी सारी उमर बिता दी।

बीमारी के समय आप की ज़िम्मदारी पर एक ही श्रद्धा था और वह श्रद्धा अल्लाह था।

आपकी मृत्यु की सूचना बिजली की तरह पूरी लाहौर में फैल गई। प्रत्येक जगह की जमायतों को तारे दें दी गई और उसी दिन शाम या दूसरे दिन सूरज के सभी अखबारों के द्वारा भारत के लोगों को इस महान व्यक्ति की मृत्यु की सूचना मिली। जहाँ वह कुलीनता जिसके साथ आप अपने निरोधियों के साथ व्यवहार करते थे हमेशा याद रही। वहीं दूसरी ओर वह खुशी भी भुलाई नहीं जा सकती जिसका इजहार आपके निरोधियों ने आपकी मृत्यु के समय किया। लाहौर की पब्लिक का एक दल आपे घटे के अन्दर ही उस मकान के सामने आकर इकड़ा हो गया। जिसमें आपका मुबारक शरीफ़ हुआ था और खुशी के गीत गा गा कर अपने रूहानी अंधे होने का सुभूत देखा ज्ञाना। कुछ लोगों ने अजिजब अजीजब स्वॉग बनाकर अपने मीठ (गिरे हुए) व्यवहार का सबूत दिया।

आपके साथ जो प्रेम आपकी जमायत को था इसका हाल इससे पता चलता है कि बहुत थे जो आपके मुबारक शरीफ़ को अपनी आंखों के सामने पड़ा देखते थे परन्तु वह इस बात को बानने को तैयार थे अपने होश (संबंधों) को दूर तियार मान लें परन्तु यह मानना उन्हें स्वीकार न था कि उनका प्रेम उनसे हमेशा-हमेशा के लिए जुड़ा हो गया है। जिसने मसीह के मानने वालों और इस मसीह के मानने वालों का अपने मुर्दिद के साथ प्रेम में यह फर्क है कि वह तो मसीह के सतीब से मिली उतने पर हैरान थे और वे अपने मसीह के निधन पर हैरान थे। उनकी समझ में यह नहीं आता था कि मसीह जिन्दा किस तरह है और इनकी समझ में न आता था कि मसीह मरा किस तरह है। अजौ से तेरह सो साल पहले एक व्यक्ति जो ख्वातमनवीमीन होकर आया था उसकी मृत्यु पर अधिक सच्चे मन से एक कवि ने सच्चाई से मरा उजा ये शीर कहा था कि:-

..............................................................................................................
अर्थात कि तू मेरी आँख की पुतली था। तेरी मौत से मेरी आँख अन्धी हो गई।
अब तेरी पश्चात कोई व्यक्ति पड़ा मरा करे हमें उसकी कोई चिन्ता नहीं। क्योंकि हम
tो तेरी मृत्यु से झर रहे थे।

आज तेरह सो वर्ष पश्चात् उस नबी के एक गुलाम की मृत्यु पर फिर वही
दृष्टि आँखों ने देखा कि जिन्होंने उसे पहचान लिया था उनका यह हाल था कि यह
संसार उनकी नजरों में तुच्च हो गया था। और उनकी सारी खुशी दूसरे जहान में
चली गई बतिक अब तक आठ साल बीत गए हैं। उनका यही हाल है और यदि
शाताब्दी भी बीत जाए फर्तू वह उनको कभी नहीं भूल सकते जबकि खुदा ताआला
का प्यारा रसूल उनके साथ चलता रहता था। दर्द व्यक्ति को परेशान कर देता है
और मुझे हजरत मसीह मौजूद अल्लाह उल्लाह की मृत्यु का वर्णन करके कहीं से
कहीं चला गया। मैंने अभी वर्णन किया है कि साढ़े दस बजे आपकी मृत्यु हुई। उसी
समय आपके मुबारक शाह को कादियान में पहुँचाने का प्रबंध किया गया और शाम
की गाड़ी में बंधित हृदय के साथ आपकी जमानत जनाजा लेकर चली और आपका
इलाहाम पूरा हुआ जो समय से पूर्व कई पत्रिकाओं में छप चुका था कि “उनका शाह
कफ़न में लपेट कर लाए हैं।”

बटाला पहुँच कर आपका जनाजा उसी समय कादियान पहुँचाया गया और
इससे पहले कि आपको दफन किया जाता कादियान की जमानत में (जिनमें कई सो
से अभिन्न प्रतिनिधि बाहर की जमानतों के भी शामिल थे।) सब लोगों की सहमति
से आपका प्रतिनिधि और खलीफा हजरत मौलवी हाजी मूल्यीन रजी अल्लाह अन्हों
साहिब बैराम को मान कर उनके हाथ पर बैठात कर ली और इस प्रकार अल्लाह
में लिखी वह भावित्यवाणी पूरी हुई कि “जैसे हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अल्लाह
वस्तू के पश्चात् हजरत अबू बकर रजी अल्लाह अन्हों खड़े हो गए थे। मेरी
जमानत के लिए भी खुदा ताआला इसी रंग में प्रवर्धन करेगा।” इसके पश्चात्
खलीफा-ए-वकील ने आपका जनाजा पढ़ाया और दोस्पह दे पश्चात् आप को दफन
कर दिया गया और इस प्रकार आपका वह इलाहाम (कि “सताईस को एक वाक्या
हमारे सम्बन्ध में”) जो 1902 ई. में हुआ और विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित हो
चुका था पूरा हुआ। क्योंकि 26 मई को आपकी मृत्यु हुई और 27 मई को आप दफन
फिर गए। और इस इल्हाम के साथ एक और इल्हाम भी था जिससे इस इल्हाम के माने स्पष्ट बता दिए गए थे और वह इल्हाम यह था कि “वक्त रसीद” अर्थात् तेरी मृत्यु का समय आ गया है।

आपकी मृत्यु पर भारत के सब अखबारों ने विरोध के बावजूद इस बात को कुबूल किया कि इस युग के आप एक महान व्यक्ति थे।
SEERAT HAZRAT MASSIEH MAOOD (A.S)

by:
Hazrat Mirza Basheeruddin Mehmood Ahmad Khalifatul Massieh the 2nd

Hindi Translation:
Bushra Tayyaba Ghori
Sadar Lajna Bharat

First Edition in Hindi 2000

Published by:
Nazarat Nashro Ishaat
Sadar Anjuman Ahmadiyya Qadian
Qadian - 143516
Distt. Gurdaspur Punjab
Ph: 0091 - (0)1872 - 70749
Fax: 0091 - (0)1872 - 70105

Fazle Umar Printing Press Qadian